सम्पूर्ण समाधान

एक नयी सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक व्यवस्था

संक्षिप्त में

लेखक प्रेमजीत सिरोही

संपादन - अम्बरीष मिश्रा

सभी के लिए सम्पूर्ण सुखी जीवन

सभी को सारी सुख-सुविधाएं और सत्ता की ताकत 24X7 लोगों के पास

यह ई-बुक संपूर्ण समाधान प्रस्ताव को संक्षेप में समझाती है। प्रस्ताव को पूरी तरह समझने के लिए कृपया पुस्तक का विस्तृत रूप पढ़ें। हमारी वेबसाइट से मुफ्त पीडीएफ डाउनलोड करें।

प्रकाशन : १२ जनवरी २०२३
Copyright © 2023 Premjeet Sirohi

WWW.UNIVERSALLIFEMANAGEMENT.ORG

प्रेमजीत सिरोही 9013383424

संस्थापक - यूनिवर्सल लाइफ मैनेजमेंट

प्रेमजीत सिरोही एक वक्ता, लेखक एवं दार्शनिक हैं। वे यूनिवर्सल लाइफ मैनेजमेंट संस्था के संस्थापक भी हैं। यह संस्था वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रदान करने के लिए एक थिंक टैंक है। प्रेमजीत सिरोही जी की पुस्तक सम्पूर्ण समाधान- (एक नयी सामाजिक राजनैतिक अर्थव्यवस्था) मानव जीवन की सभी समस्याओं के लिए एक नयी व्यवस्था की पेशकश करती है, जिसमें सभी मनुष्य समान रूप से सुखी हो सकेंगे। उन्होंने कई व्याख्यान दिए हैं और देश विदेश में विभिन्न मंचों पर भाग लेकर इस समाधान को जनजन तक पहुंचाने का अभियान शुरू कर दिया है। उनके व्याख्यानों में अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शन शास्त्र से लेकर मनोविज्ञान तक जैसे कई विषयों का समावेश होता है। उनके निष्कर्ष बहुत ही अनोखे, मौलिक और अकादमिक परंपरा में अनसुने हैं।

WWW.UNIVERSALLIFEMANAGEMENT.ORG

मुकुंदभाई पटेल 7600034995

सहसंस्थापक यूनिवर्सल लाइफ मैनेजमेंट

मुकुंदभाई पटेल एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय थे। प्रेमजीतजी से मिलने के बाद ULM संस्थान/ट्रस्ट का गठन किया। वर्तमान में ULM के टीम एवं कार्यक्रम व्यवस्थापक, वक्ता और गुजराती भाषा के अनुवादक है। ULM के विभिन्न प्लेटफार्म पर लोगों को जोड़ने के लिए उन्होंने यूएलएम संस्था का सम्पूर्ण ढांचा तैयार किया। प्रशिक्षण शिविर के आयोजन किए जिससे जिज्ञासु सम्पूर्ण समाधान व्यवस्था और जीवन दर्शन को स्पष्ट रूप से समझ सकें और सरलता से प्रचार प्रसार कर सकें। उन्होंने युवाओं को लक्षित करते हुए कॉलेज एवं स्कूल कार्यक्रम शुरू किए। अभी वह पूरे भारत में विभिन्न मंचों पर यूएलएम कार्यक्रम आयोजन में ध्यान देते हैं और वक्ता के रूप में प्रेमजीत जी के साथ प्रचार प्रसार करते हैं।

विषय सूचि

1. सम्पूर्ण समाधान क्या है?
2. हमारे जीवन के दो पहलू : सुख और दुख
3. जीवन का उद्देश्य सुख भोगना है
4. जीवन के उद्देश्य पूर्ति के लिए एक व्यवस्था की आवश्यकता होती है
5. मौजूदा व्यवस्था हमारे उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता है
6. नई व्यवस्था का उद्देश्य
7. अधिकांश के पास पैसे की कमी है और उस कारण अच्छे जीवन का मौका नहीं
8. अधिकांश जनता के पास पैसे की कमी क्यों है?
9. अन्यायपूर्ण अर्थशास्त्र के परिणाम
10. एक नए प्रकार की गैर-मौद्रिक अर्थव्यवस्था
11. मुफ्त शिक्षा का अधिकार
12. वांछित रोज़गार का अधिकार
13. वांछित उत्पादों और सेवाओं की मांग का अधिकार
14. उत्पादों, सेवाओं और सार्वजनिक सुविधाओं का लाभ उठाने का अधिकार
15. सत्ता में समान शक्ति का अधिकार
16. सुरक्षा और संरक्षण का अधिकार
17. अभाव सर्वव्यापी नहीं है
18. अभाव की अवधारणा के परिणाम
19. मुद्रा और बाज़ार का नतीजा
20. इंसान की चाहत सीमित होती है
21. मानव की इच्छाएं पूरी की जा सकती हैं
22. आक्रामकता खराब व्यवस्था का परिणाम है
23. दूसरों से श्रेष्ठ होने की इच्छा हमारा मूल स्वभाव नहीं है
24. हम सभी के रूचि होते हैं और हम अपने रूचि के क्षेत्र में काम करना पसंद करते हैं

विषय सूचि

25.सुख क्या है?

26.इच्छाओं की चार श्रेणियां

27.सुख को परिभाषित कर विषयों को भोगा जा सकता है

28.सुख प्रबंधन के चार तल

29.व्यक्तिगत सुख के चार तल

30.चार प्रकार के व्यक्तित्व

31.जीवन में चुनाव और निर्णय के स्वाभाविक तल

32.हर व्यक्तित्व के सुख का अपना फ्रेम होता है

33.अर्थशास्त्र क्या है?

34.नया अर्थशास्त्र बाज़ार रहित है

35.संसाधनों पर कोई निजी स्वामित्व नहीं है

36.नई आर्थिक व्यवस्था केंद्रीय रूप से नियोजित है

37.सभी की एक डिजिटल प्रोफ़ाइल होगी

38.आप बिना पैसे के ऑर्डर दे सकते हैं

39.सभी सुखों को परिभाषित कर आर्थिक लक्ष्य तय किये जाएंगे

40.नागरिक अपनी मांग सेंट्रल पोर्टल पर दर्ज़ कर सकते हैं

41.कीमतों के बिना एक नया अर्थशास्त्र लेकिन एक नए तरह का हिसाब रहेगा

42.व्यक्तिगत मूल्यांकन के बिना एक नया अर्थशास्त्र

43.सभी रोज़गार का समान मूल्य होगा

44.रोज़गार की चार श्रेणियां

45.आर्थिक नियोजन का आधार

46.अर्थशास्त्र की मुख्य समस्या

47.कीमतों के बिना कोई आर्थिक निर्णय कैसे ले सकता है?

48.गुणवत्ता और दक्षता को कैसे बनाए रखा जा सकता है?

49.संतुष्टि रेटिंग

विषय सूचि

50. क्या लोग इतनी मांग नहीं करेंगे जो उत्पादन क्षमता से अधिक हो जाए?

51. कुछ उत्पादों/सेवाओं को व्यक्तिगत रूप से और कुछ को सामाजिक रूप से आवंटित किया जाएगा

52.एक ही मानक के सभी नगर

53.असली लोकतंत्र

54.नीति, नियम और निर्देश का निर्माण

55.कानून पारित करना

56.शिकायत निवारण

57.जनता अपनी शक्ति का इस्तेमाल कैसे करेगी?

58.व्यवस्था की पारदर्शिता

59.विरोध प्रदर्शन और हड़ताल की कोई जरूरत नहीं

60.खुला संवाद मंच

61.पदों का आवंटन

62.प्रशासनिक विभाजन

63.चुनाव प्रक्रिया

64.एक सहज व्यवस्था

65.आरामदायक और सुरक्षित कार्य वातावरण

66.प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय नहीं रहेगा

67.धार्मिक मान्यता आपका व्यक्तिगत मामला है जब तक यह व्यक्तिगत क्षेत्र में है

68.अपराध के लिए कोई मकसद या तंत्र नहीं रह जायेगा

69.किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं

70.परिवार के सदस्यों के बीच संबंध वास्तविक होंगे

71.किसी को कष्ट और प्रताड़ना नहीं झेलना पड़ेगा

72.लम्बी उम्र और सुखद स्वस्थ जीवन

1

सम्पूर्ण समाधान क्या है?

<u>संपूर्ण समाधान प्रस्ताव</u> सभी के स्वर्णिम जीवन के लिए एक नई विश्व व्यवस्था, एक नया सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक संरचना है। उक्त व्यवस्था को अपनाकर समस्त eco-system (जिसमें मनुष्य, अन्य जीव, जैविक एवं अजैविक कारक आदि सम्मिलित हैं) का प्रबंधन इस प्रकार संभव हो पायेगा कि जीवन दुःख न हो और सभी प्रकार के सुख पैदा हों। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें इस दुनिया के सभी लोगों को एक परिवार के रूप में देखा गया है। इस प्रस्ताव का उद्देश्य संकीर्ण नहीं है जैसे किसी समुदाय या राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाना, बल्कि एक व्यापक समाधान है जिसमें इस ग्रह पर मौजूद संपूर्ण जीवन शामिल है। सुख के मूल कारकों का ज्ञान होने से हम एक व्यापक समाधान की प्रस्तुति कर पा रहे हैं ।

2

हमारे जीवन के दो पहलू : सुख और दुख

हमारे जीवन के दो पहलू हैं, एक सुख है और एक दुख और दोनों के कारण हैं। सुख के प्रकट होने का एक कारण होता है और दुख के प्रकट होने का दूसरा कारण होता है। वे भी एक प्रक्रिया द्वारा प्रकट होते हैं। वे अकारण नहीं हैं। कारण को समझकर हम उस पर अधिक नियंत्रण कर सकते हैं, उसे जानते बुझते ऐसे प्रबंधित कर सकते हैं के अकस्मात दुख प्रकट नहीं हों और सुख बढ़ता जाये ।

3

जीवन का उद्देश्य सुख भोगना है

सभी मनुष्यों की इच्छाएं और ज़रूरतें होती हैं। हम अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जीते हैं। जीवन का अंतिम रूप से उद्देश्य या अर्थ इच्छाओं की निरंतर पूर्ति करते हुए सुख का अनुभव करना है। अगर हमारी इच्छाएं लंबे समय तक अधूरी रह जाती हैं और अगर जीवन में ज़्यादा तक़लीफ़ें आती हैं तो हमें दुख का अनुभव होता है। हम में से कोई भी दुःख नहीं चाहता और हम सभी सुख चाहते हैं और यही जीवन का उद्देश्य है। हम सभी सुख के लिए प्रयास करते हैं और कोशिश करते हैं कि कोई दुख हमें स्पर्श न करे। बिना सुखों के जीवन का कोई अर्थ नहीं बचता।

4

जीवन के उद्देश्य पूर्ति के लिए एक व्यवस्था की आवश्यकता होती है

हम सभी प्रकार के सुखों का अकेले सृजन नहीं कर सकते। अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हमें दूसरों के सहयोग और संसाधन प्रबंधन की एक प्रणाली की आवश्यकता होती है। यह व्यवस्था ही है जो हमारे जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक स्थितियों का निर्माण करती है और इसलिए हमें व्यवस्था को बुद्धिमानी से डिज़ाइन करना चाहिए ताकि दुख के सभी कारण उसमें पैदा न हों और सुख के सभी कारणों का निर्माण हो सके। सरल शब्दों में, व्यवस्था उस जीवन को सक्षम कर पाए जो लोग जीने की इच्छा रखते हैं। उन्हें आसानी से अपनी इच्छित खुशियां मिल पाएं और स्वाभाविक रूप से सहयोग में आ पाएं।

5

मौजूदा व्यवस्था हमारे उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता है

अपर्याप्त व्यवस्था के कारण हम जीवन का पूरी तरह से मज़ा नहीं ले पा रहे हैं चूँकि व्यवस्था परस्पर लोगों को एक दुसरे का प्रतिद्वंदी बनाए दे रही है। लोग वह अनुभव कर रहे हैं जो वे अनुभव नहीं करना चाहते और जो अनुभव चाहते हैं वह नहीं कर पा रहे हैं। लोग वह सब करने के लिए मजबूर हैं जो वे नहीं करना चाहते हैं। एक बेहतर व्यवस्था का अभाव हमारे दैनिक जीवन में देखे जाने वाले परिणामों से स्वतः स्पष्ट है।

मानव प्रकृति की सही समझ के अभाव में अपनाये गए सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक मॉडल हमारे जीवन में दुख और संघर्ष का मूल कारण हैं।

6

नई व्यवस्था का उद्देश्य

दो उद्देश्य

- दुख पैदा करने वाले कारकों का उन्मूलन
- सुख पैदा करने वाले कारकों की स्थापना

तो प्रस्तावित व्यवस्था के दो उद्देश्य हैं। एक है दुख पैदा करने वाले कारकों को व्यवस्था से हटा देना और दूसरा उन कारकों को स्थापित करना जिनके द्वारा हम वह सुख प्राप्त कर सकते हैं जो हम सभी चाहते हैं। दुख के कारण को दूर करना होगा ताकि वह जन्म न ले और हमें दर्द, परेशानी का अनुभव न हो। इसके अलावा, हमें सुख के लिए कारक बनाने होंगे, ताकि सुख के लिए गतिविधियां हों और हम जीवन में ख़ुशी अनुभव करें।

मौजूदा व्यवस्था अपर्याप्त क्यों है?

7

अधिकांश के पास पैसे की कमी है और उस कारण अच्छे जीवन का मौका नहीं

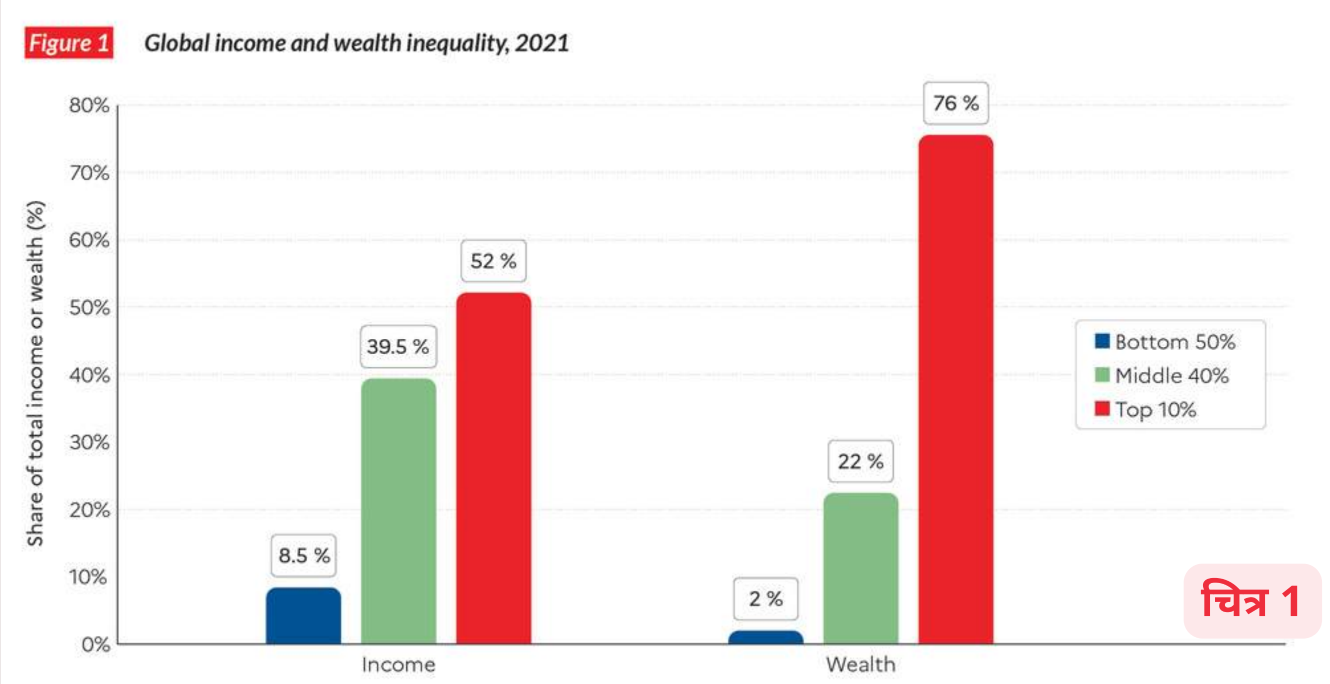

चित्र 1

वर्तमान में वैश्विक आबादी का सबसे अमीर 10%, वैश्विक आय का 52% हिस्सा लेता है, जबकि सबसे गरीब आधी आबादी, इसका 8.5% कमाती है। औसतन, वैश्विक आय वितरण के शीर्ष 10% में से एक व्यक्ति प्रति वर्ष कमाता है (USD122,100), जबकि वैश्विक आय वितरण के सबसे गरीब आधे में से एक व्यक्ति प्रति वर्ष (USD3,920) कमाता है (चित्र 1)।

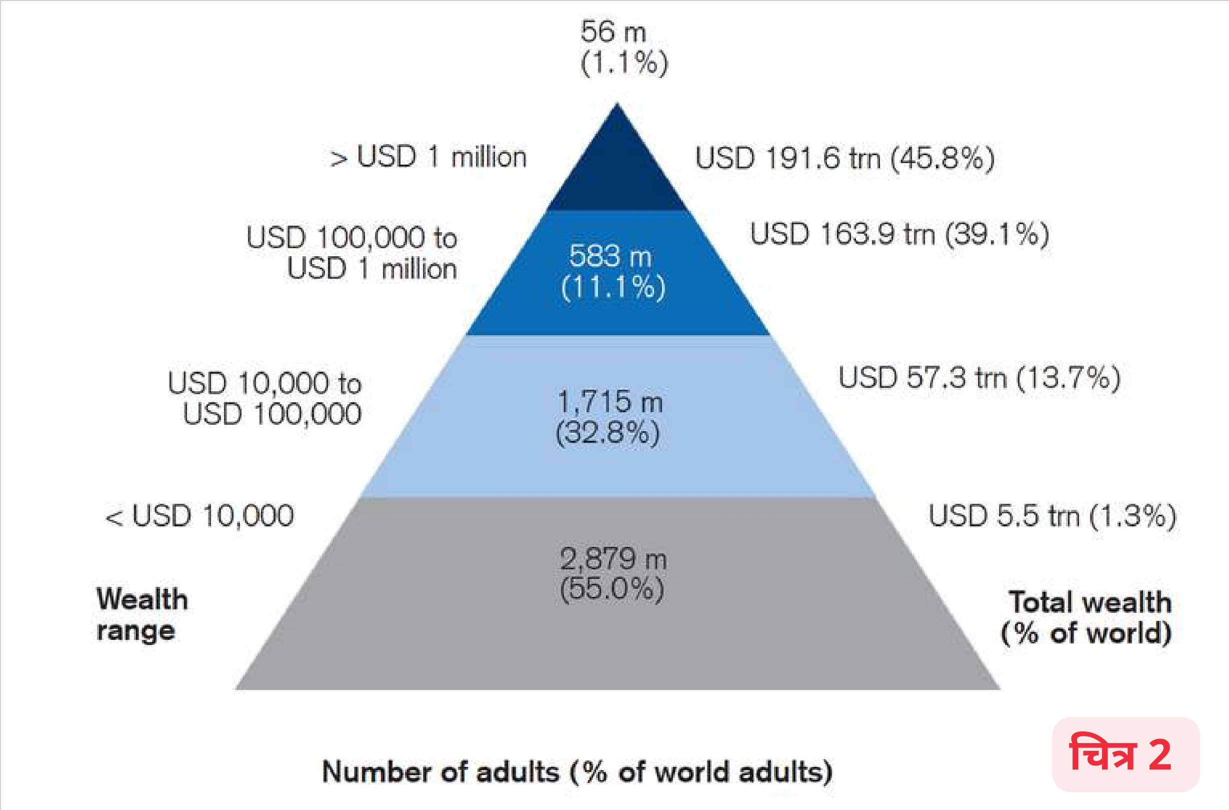

Source: James Davies, Rodrigo Lluberas and Anthony Shorrocks, Credit Suisse Global Wealth Databook 2021

वैश्विक स्तर पर शीर्ष 1% परिवारों के पास कुल व्यक्तिगत संपत्ति का 45.8% भाग है, जबकि निचले 55% के पास केवल 1.3% (चित्र 2) है।

8

अधिकांश जनता के पास पैसे की कमी क्यों है?

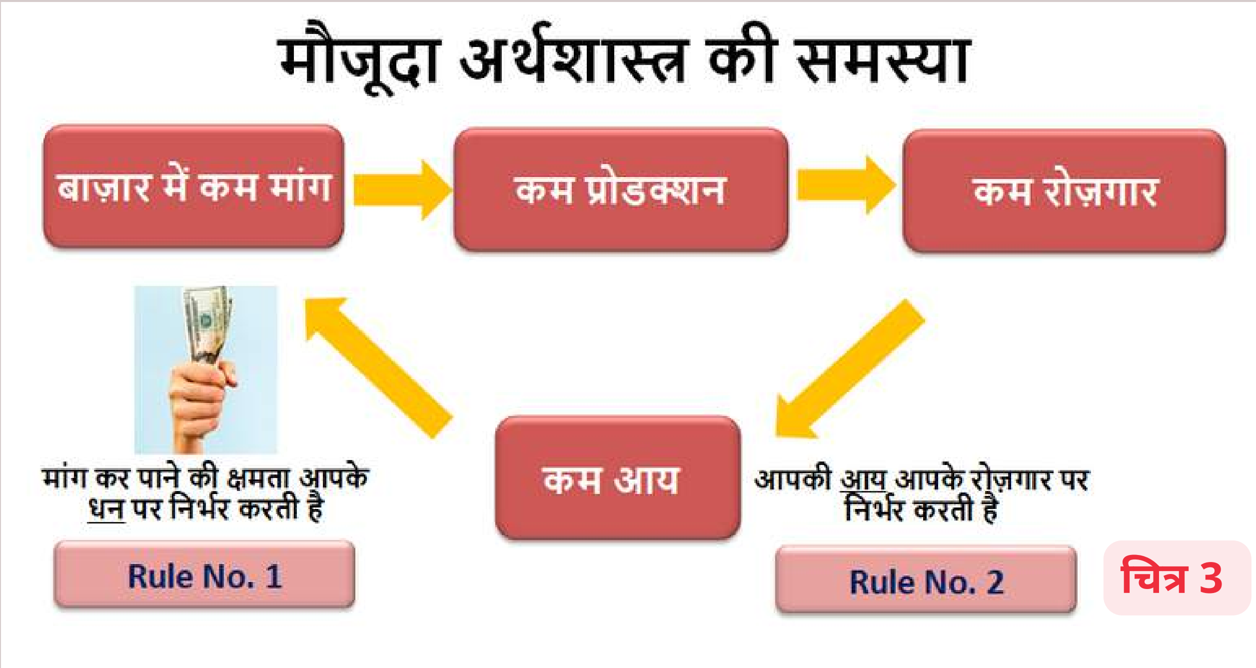

चित्र 3

हमारा प्रतिदिन का अनुभव है कि हमें बाज़ार से कुछ भी खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है(Rule no.1)। तो अब तक हमने जिस प्रणाली को अपनाया है, उसमें क्रय शक्ति उस धन राशि पर निर्भर करती है जो किसी के पास है। हम यह भी जानते हैं कि अधिकांश आबादी के पास इतना पैसा नहीं है कि वह अपनी इच्छानुसार वह सब कुछ खरीद सके जिससे वह एक सुखी जीवन जी पायेगा। हमारे हाथ में पैसे की कमी के कारण हम अपनी मांग बाज़ार में नहीं रख पा रहे हैं। इसे आप अपने स्वयं के जीवन या अपने आस-पास के लोगों के जीवन को देखकर समझ ही सकते हैं।

हम सभी जानते हैं कि यदि हमारे पास अधिक पैसा होता तो हम अधिक विलासिता की वस्तुएं खरीदते, अधिक आराम से रहते और अधिक सुरक्षित महसूस करते और यही कारण है कि अधिकांश आबादी आर्थिक रूप से मज़बूत होने और बड़ी आय प्राप्त करने की कोशिश में लगी हुई है।

बाज़ार अर्थशास्त्र में मांग कर पाने के लिए पैसा एक शर्त है और केवल कुछ ही अमीर हैं। जब हम अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को मांग के रूप में रखने में सक्षम नहीं होते हैं तो बाज़ार पर्याप्त वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए आगे नहीं बढ़ता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बाज़ार में पूंजीपति मांग के अनुसार उत्पादन करते हैं। बाज़ार में मांग का उत्पादन से सीधा संबंध है और इस तरह यह विकास दर, रोज़गार दर को प्रभावित करता है।

जब बाज़ार पर्याप्त वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की ओर नहीं बढ़ता है तो पर्याप्त रोज़गार कभी पैदा नहीं हो सकता है। पर्याप्त रोज़गार के अभाव में, हमारे हाथ में कभी भी पर्याप्त धन का संचार नहीं हो सकता है (Rule No.2)। ऐसा इसलिए है क्योंकि रोज़गार हमारे हाथ में आने वाले पैसे का प्राथमिक स्रोत है। पर्याप्त आय के बिना, हम अपनी पूरी मांग को नहीं रख सकते हैं और यह दुष्चक्र जारी रहता है। इस नीति से धन का संचार सीमित हो जाता है।

यह मूल नियम अर्थव्यवस्था को संकुचित करता है। उत्पादों / सेवाओं का उत्पादन और उस तक पहुँच पाना इस नियम द्वारा बाधित हो जाता है। तो रोज़गार के बिना, आय के लिए कोई वैध चैनल नहीं बचता और बहुत से लोग दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं जिनके पास पैसा है। अधिकांश की आय बहुत कम होती है क्योंकि बाज़ार में ज़्यादा लोग हैं और रोज़गार कम है। पूरी आबादी में कुछ ही लोग होते हैं जो अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए भरपूर आय अर्जित कर पाते हैं।

प्रौद्योगिकी सुधार, कानूनी ढांचे में सुधार, infrastructure विकास जैसे अन्य कारकों के कारण आर्थिक विकास ज़रूर होता दिखता है, लेकिन वे कारक कभी भी उस अर्थव्यवस्था के मूल आधार को परिवर्तित नहीं कर पाते हैं जिसमें हम संचालित हो रहे हैं। मूल आधार यह है कि आप उत्पादों और सेवाएं की मांग कर सकते हैं आपकी आय के अनुसार। आपको ऋण की पेशकश की जा सकती है (आपके क्रेडिट मूल्य के आधार पर) लेकिन बैंक आपको पूरी स्वतंत्रता के साथ मांग करने में छूट नहीं देते हैं क्योंकि आपको ऋण राशि ब्याज के साथ वापस करनी होती है। आप अपनी आय से अधिक नहीं खरीद सकते हैं और आपकी आय का एक हिस्सा भविष्य की सुरक्षा के लिए भी बचत के रूप में जाता है।

भले ही कोई व्यक्ति अपनी आय में से एक पैसा भी न बचाए, फिर भी वह तब तक पूरी तरह से मांग नहीं कर पाता जब तक कि उसके जीवन में बहुत सारा पैसा न आ जाए। हम जानते हैं कि पूरे इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि अधिकांश नागरिक पूरी तरह से मांग कर सकें हों। चूंकि मांग अपनी पूरी क्षमता तक नहीं है, इसलिए उत्पादन और रोज़गार भी अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुँच पाती। जिससे नागरिक भी मांग करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं कमा पाते हैं। (चित्र 3 देखें)। इसलिए यदि हम इस नीति के परिणाम को गहराई से देखें, तो हम समझ सकते हैं कि जब तक हमारी मांग करने की क्षमता पैसे पर टिकी हुई है, तब तक अर्थव्यवस्था में अधिकतम मांग कभी नहीं हो सकती है।

इसका मतलब है कि हमारे पास कभी भी पर्याप्त उत्पादन और रोज़गार नहीं होगा। रोज़गार की कमी के कारण हमारे हाथ में मांग रखने के लिए पर्याप्त धन नहीं होगा और विकास एक वृहद दृष्टिकोण से अवरुद्ध रहेगा। इसलिए, मानव समाज के अधिकांश लोग कभी भी मौजूदा डिज़ाइन द्वारा आराम से और विलासिता से नहीं रह सकते हैं। इस तरह के अर्थशास्त्र के कारण, जनता के लिए समृद्धि हमेशा पहुंच से बाहर होती है। यह प्रणाली अनिवार्य रूप से जनता के लिए अभाव और ग़रीबी को मज़बूती से बरकरार रखेगी और हम सभी इस समस्या से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं।

आज तक की आर्थिक व्यवस्था में हमने मांग, उत्पादन और वितरण को एक माध्यम के साथ जोड़ा है जिसे मुद्रा कहा जाता है। इस जंगली अर्थशास्त्र का प्रारंभिक बिंदु मांग है (जो पैसे पर निर्भर करता है) और जब तक मांग करने की क्षमता आय से मुक्त नहीं होती है, तब तक मांग करने में सक्षम होने के लिए पैसा हमारे हाथ तक नहीं पहुंच सकता है। यह catch-22 स्थिति है।

सरकारें और अर्थशास्त्री आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए कई नीतियां बनाते हैं। साथ ही इस मूलभूत नियम से हम आर्थिक गतिविधियों को जड़ से दबा रहे हैं। यह प्रमुख अंतर्विरोध है और इस से अन्य परिणामी खामियां मौजूदा अर्थशास्त्र में पैदा होती हैं। इसलिए यह ग़रीबी का अर्थशास्त्र है। बहुसंख्यक इस अर्थशास्त्र में कभी भी समृद्ध नहीं हो सकते जैसा कि परिणामों से स्पष्ट है। इसके अलावा, अमीर भी इस आर्थिक व्यवस्था के भीतर असंतुष्ट जीवन जीते हैं क्योंकि पैसा उन्हें शांति, सुरक्षा की भावना, सुंदर रिश्ते, सुंदर वातावरण, मिलावट रहित भोजन और विकसित संस्कृति नहीं खरीद के दे सकता है जिसमें वे रहना चाहते हैं।

9

अन्यायपूर्ण अर्थशास्त्र के परिणाम

तो यह पूरी अर्थव्यवस्था 10-20% लोगों के आराम के लिए बनाई गई है और यह उनके इर्द-गिर्द घूमती है। शेष लोग किसी न किसी तरह से अल्प आय या सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों द्वारा प्रदान की गई सहायता से अपना निर्वाह करते हैं। तो आप समझ सकते हैं कि बहुसंख्यक ग़रीब होकर जीने के लिए बाध्य हैं। जब तक यह अर्थशास्त्र जारी रहेगा, कोई भी राष्ट्राध्यक्ष इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। जब तक इस अर्थशास्त्र में सुधार नहीं किया जाता है, क्या वास्तव में ग़रीबी का समाधान किया जा सकता है? जब रोज़गार की कमी है तो बहुसंख्यक किसी भी तरह से संपन्नता के घेरे में कैसे आ सकते हैं? जब उनके पास रोज़गार नहीं है, तो उनके पास पैसा कमाने का कोई ज़रिया नहीं है।

वे कभी भी संपन्नता में नहीं आ सकते। प्राचीन काल से यही तरीका रहा है। बाज़ार विकसित हुए हैं, विनिमय का माध्यम विकसित हुआ है लेकिन हमारे अर्थशास्त्र का मूल आधार वही बरक़रार रहा है। इसका परिणाम यह होता आया है कि हमेशा कुछ लोगों के पास अधिकांश धन जमा हो जाता है और जनता ग़रीबी के कारण बेहद ख़राब परिस्थितियों में रहती आयी है।

तो यही अर्थशास्त्र हमारे जीवन के संघर्षों का मुख्य कारण है। हमारी ग़रीबी के लिए नेता जिम्मेदार नहीं हैं, हमारी ग़रीबी के लिए दुश्मन देश जिम्मेदार नहीं हैं, अमीर उद्योगपति हमारी ग़रीबी के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, हम खुद अपनी ग़रीबी के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। कोई भी 10% लोग अति संपन्न होंगे और 90% लोग अभाव में जियेंगे। यह परिणाम हमारी आर्थिक प्रणाली के डिज़ाइन द्वारा है। इसे शायद ही प्रमाण की आवश्यकता है, यह परिणामों से स्पष्ट है।

इस अर्थशास्त्र से पैसे के लिए प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष पैदा होता है। परिवार के सदस्यों के बीच मनमुटाव रहता है और पैसों के चलते रिश्तों में खटास आ जाती है। परिवार के सदस्य कमाने वाले पर निर्भर रहते हैं। कई गतिविधियाँ जो हमारे जीवन में योगदान करती हैं जैसे कि बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना मौजूदा अर्थशास्त्र से बाहर रखा गया है।

अधिकांश लोग कम आय वाले मज़दूर और कर्मचारी हैं। नौकरीपेशा लोगों के बीच भी कुछ ही लोगों की आय अधिक होती है। उच्च आय वाले कुछ ही पद हैं जैसे कि CEO और शीर्ष स्तर के प्रबंधक। केवल वे ही समृद्ध जीवन का खर्च उठा सकते हैं, दूसरों को न्यूनतम के साथ जीवित रहने के लिए मजबूर किया जाता है। सभी अपराधों का मूल कारण भी यही अर्थशास्त्र है। आखिरकार लोग उन सुखों को पूरा करने के लिए अपराध करते हैं जिन्हें वे वैध प्रयासों से हासिल नहीं कर पाते हैं। मैं पहले ही बता चुका हूं कि आर्थिक डिज़ाइन से बेरोजगारी क्यों पैदा होती है। लोग अनैतिक व्यवहार करते हैं क्योंकि वे अधिक पैसा कमाना चाहते हैं और डरते हैं कि वे उन सुख-सुविधाओं को खो देंगे जो पैसे से खरीद सकते हैं। इस कारण वे दूसरों के साथ भी दुर्व्यवहार करते हैं। सारे झगड़े, कानूनी और गैर कानूनी लड़ाइयाँ भी पैसे कमाने के लिए ही होती हैं। चूंकि गरीबी की दुनिया चहुँ और है, इसलिए लोग अपराध करने के लिए मजबूर हैं। हर किसी को अपने परिवार को संभालना होता है और अपनों की देखभाल करनी होती है और इसके लिए उन्हें पैसों की जरूरत होती है। अगर वह परिवार की देखभाल नहीं करेगा तो समाज उनके साथ ऐसा व्यवहार करेगा जैसे कि वे बेकार और तुच्छ हैं। तो जीवन का यह प्रतिस्पर्धी तरीका अर्थशास्त्र के मौजूदा मॉडल द्वारा बनाया गया है। यही अर्थशास्त्र हमारे सभी दुखों का मूल कारण है।

यह अर्थशास्त्र है जो हमारे जीवन की स्थिति को बहुत प्रभावित करता है। संविधान में वर्णित सभी उद्देश्य और आदर्श धरातल पर साकार नहीं होते हैं। उन्हें वास्तविकता में क्यों नहीं लाया जा सकता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि सरकारों को भी अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। जब अर्थव्यवस्था ही अपर्याप्त मांग पर चल रही है तो सरकारें करों द्वारा पर्याप्त राजस्व कैसे अर्जित कर सकती हैं? जब सरकार का राजस्व कम होता है तो वह सार्वजनिक सुविधाओं पर ज़्यादा खर्च नहीं कर सकती है। इसलिए सरकारें भी खराब अर्थशास्त्र में ग़रीब रहती हैं।

समाधान क्या है ?

10

एक नए प्रकार की गैर-मौद्रिक अर्थव्यवस्था

मैं एक नई गैर-मौद्रिक, बाज़ार रहित आर्थिक प्रणाली का प्रस्ताव रख रहा हूं जिसमें नागरिकों के बीच कोई विनिमय नहीं है। कृपया ध्यान दें, यह न तो गिफ्ट इकॉनमी है और न ही यह समाजवादी कमांड अर्थव्यवस्था है। नए मॉडल में, हम सभी लोगों की ज़रूरतों को जान सकेंगे और एक केन्द्रीय रूप से नियोजित अर्थव्यवस्था के माध्यम से मांग के अनुसार उत्पादन का प्रबंधन कर सकेंगे। इस विकेंद्रीकृत-केंद्रीकृत प्रणाली के माध्यम से पूरी मांग एकत्र की जाएगी, और एक ही मैनेजमेंट के अंतर्गत सारे आर्थिक क्रियाकलाप होंगे ।

व्यवस्था मांग के अधिकार के लिए विकेंद्रीकृत है लेकिन योजना, उत्पादन और आपूर्ति के लिए केंद्रीकरण के विभिन्न स्तर हैं। नई व्यवस्था में मांग रखने के लिए पैसे की कोई शर्त नहीं है। मैं पैसे और मांग के अधिकार के बीच की मौजूदा कड़ी को तोड़ने का प्रस्ताव रख रहा हूं।

नई व्यवस्था में पैसा नहीं है और बाज़ार द्वारा मूल्यांकन मौजूद नहीं होगा। अगर हम पैसा रखते हैं तो यह अपरिहार्य है कि धन कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित हो जाएगा और कई तरह की समस्याएं पैदा करेगा। इसलिए मैंने मुद्रा हटा दिया है और 25-50 वर्ष के बीच के वयस्क व्यक्ति के लिए एकमात्र शर्त यह है कि वह किसी प्रकार का रोज़गार लेकर व्यवस्था में भाग लेता रहे। समाज में उनके योगदान के लिए नागरिकों को अलग-अलग महत्व नहीं दिया जाएगा। प्रत्येक पेशे को समान रूप से महत्व दिया जाएगा और सभी नागरिक अपने प्रोडक्ट और सर्विस आर्डर को एक केंद्रीकृत पोर्टल पर दर्ज कर सकेंगे, जिसमें वर्गीकृत प्रोडक्ट / सर्विस कोड होंगे।

इस नीति द्वारा, उत्पादों और सेवाओं की अधिकतम संभव मांग पैदा होगी जो के रियल-टाइम जाना जाएगा और आर्थिक नियोजन में सब्ज़े ज़्यादा मददगार साबित होगा। अधिकतम संभव मांग की आपूर्ति को पूरा करने के लिए हमें कारखानों, मशीनों, सड़कों, परिवहन आदि जैसे अधिकतम संभव बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होगी। (नीचे चित्र 4 देखें)

इस सारे उत्पादन और वितरण प्रबंधन के लिए हमें अधिकतम मानव संसाधनों की आवश्यकता होगी। तो सरल शब्दों में, हम सिर्फ एक साधारण बदलाव से अधिकतम संभव रोज़गार की गुंजाइश पैदा करेंगे।

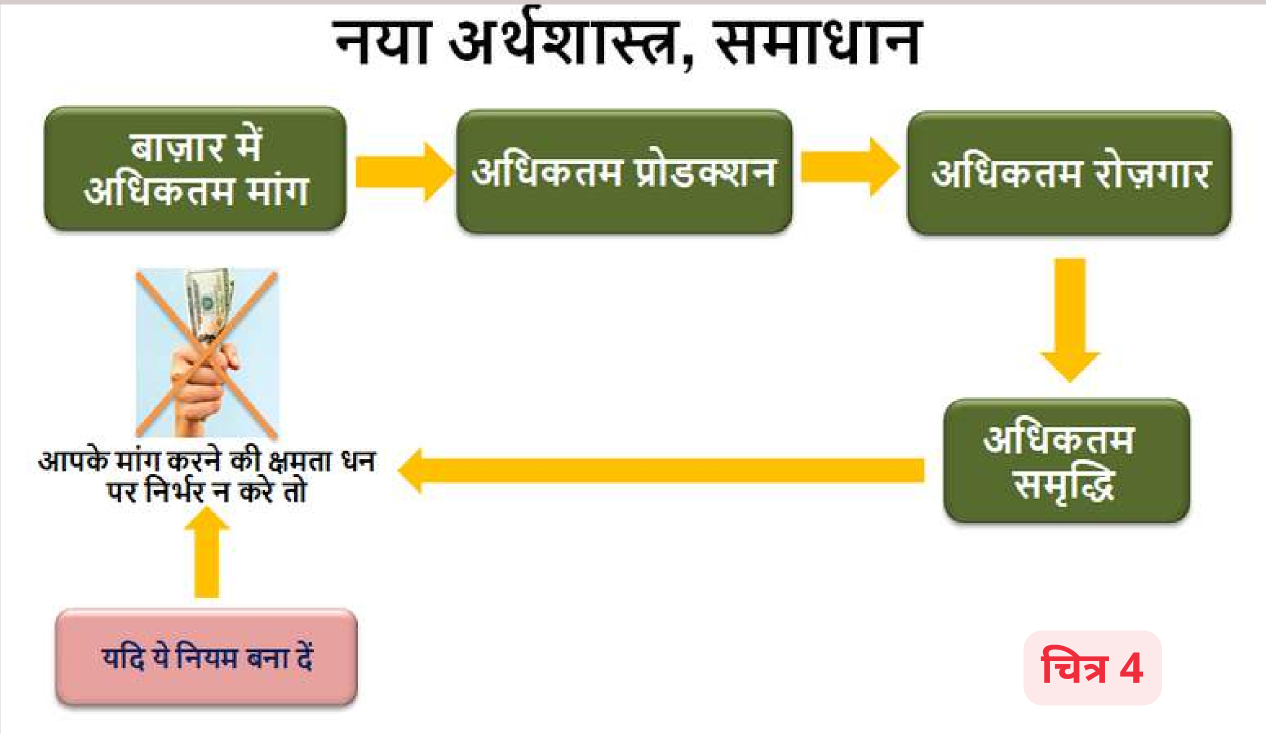

चित्र 4

इस पुण्य चक्र के कारण पूर्ण रोज़गार से सभी सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे। हम सभी समृद्धि प्राप्त करने में सक्षम होंगे। लोग वास्तविक स्वतंत्रता का अनुभव तभी कर सकते हैं जब सभी को समाज की सह-निर्मित समृद्धि का समान रूप से लाभ उठाने का अधिकार हो।

इस नए आर्थिक मॉडल के बारे में आगे के भाग में बताया जायेगा

प्रस्तावित व्यवस्था नागरिकों को क्या प्रदान करेगी?

11

मुफ्त शिक्षा का अधिकार

सभी व्यक्ति अपनी इच्छा की शिक्षा का लाभ उठा सकेंगे। 25 वर्ष की आयु तक के सभी छात्रों को बिना किसी शुल्क के एक आरामदायक जीवन की पूरी व्यवस्था प्राप्त होगी। सामान्य शिक्षा पूरी होने के बाद, क्षमता और इच्छा के अनुसार, छात्र को रोज़गार हेतु आवश्यक कौशल विकास के लिए नि: शुल्क प्रशिक्षण प्राप्त होगा। बच्चों के माता-पिता पर कोई आर्थिक बोझ नहीं पड़ेगा क्योंकि बच्चों की शिक्षा एवं पालन पोषण व्यवस्था की जिम्मेदारी होगी। बच्चों को पढ़ाई के दौरान किसी दबाव का सामना नहीं करना पड़ेगा और उन्हें क्या पसंद है और कितना पसंद है, उस हिसाब से अध्ययन करेंगे। वह पूरी शिक्षा पद्धति छात्र के सहज स्वभाव और पसंद का समर्थन करेगी।

12

वांछित रोज़गार का अधिकार

पूरा प्रशिक्षण और आवश्यक कौशल प्राप्त करने के बाद, प्रत्येक व्यक्ति का रोज़गार सुनिश्चित रहेगा, दूसरे शब्दों में, बेरोज़गारी का संकट नहीं रहेगा। चूंकि शिक्षा रुचि के अनुसार होगी, इसलिए स्वाभाविक रूप से रोज़गार भी रुचि के अनुसार होगा। 25-50 वर्ष की आयु के बीच के स्वस्थ लोगों को इस व्यवस्था का पूरा लाभ उठाने के लिए व्यवस्था द्वारा प्रस्तावित अपने रूचि और योग्यता से मेल खाता रोज़गार चुनने की आवश्यकता होगी।

सभी कार्य 25-50 वर्ष की आयु के लोगों के बीच वितरित किए जाएंगे। 50 वर्ष से अधिक आयु के योग्य व्यक्ति भी अपनी इच्छित कर्म के लिए सेवा प्रदान कर सकते हैं। पति-पत्नी में से किसी एक के लिए रोज़गार अनिवार्य होगा। इसका मतलब है कि कामकाजी उम्र की आबादी में प्रत्येक व्यक्ति एक कर्म चुनने के लिए निर्देशित होगा ताकि सभी के लिए आवश्यक उत्पाद और सेवाएं तैयार की जा सकें। शेष आबादी जैसे बच्चे, किशोर, वरिष्ठ नागरिक, बीमार लोग बिना कोई काम किए अपनी इच्छा की हर चीज़ प्राप्त करेंगे।

13

वांछित उत्पादों और सेवाओं की मांग का अधिकार

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार वस्तुओं और सेवाओं की मांग रखने का अधिकार होगा। परिवार का प्रत्येक सदस्य, चाहे बच्चा हो, वृद्ध माता-पिता, पति, पत्नी, चाहे वह कोई भी हो, वे सभी सीधे सिस्टम से मांगेंगे। चूंकि इस प्रणाली में पैसा नहीं है, इसलिए उनके लिए मांग करने में कोई बाधा नहीं है। अब तक अपनाई गई आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुसार, यदि व्यक्ति के पास धन नहीं है, तो वह बाज़ार में जाकर मांग नहीं रख सकता है। चूँकि यह अन्यायकारी है इसलिए नई आर्थिक व्यवस्था में मांग करने में कोई बाधा नहीं होगी। हर किसी की इच्छा को सिस्टम में दर्ज किया जाएगा।

14

उत्पादों, सेवाओं और सार्वजनिक सुविधाओं को भोगने का अधिकार

उस काल में तकनीकी प्रगति के स्तर के अनुसार, सभी के लिए सभी सुविधाएं समान रूप से उपलब्ध होंगी। दूसरे शब्दों में, सिस्टम द्वारा डिज़ाइन किए गए पोर्टल पर ऑर्डर देकर उत्पादों/सेवाओं के लिए सभी व्यक्तिगत इच्छाओं को लगातार पूरा किया जाएगा। आप अपनी रुचि के किसी भी उत्पाद/सेवा के लिए पूछेंगे और सिस्टम मांग के अनुसार उत्पादन करेगा और वितरित करेगा।

दुनिया के सभी नागरिकों के लिए सभी प्रकार की सार्वजनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। सरकार इन सुविधाओं को प्रति नगर समान रूप से वितरित करेगी। इनमें आवास, सड़क, बिजली, पानी, परिवहन, पार्क, स्टेडियम, पुस्तकालय, स्वास्थ्य क्लब आदि सुविधाएं शामिल हैं।

15

सत्ता में समान शक्ति का अधिकार

आज क्या होता है कि हम अपनी शक्तियां नेताओं को सौंप देते हैं। हम संसद को हक़ देते हैं कि हमारे नाम पर वे हम पर शासन कर सकें, यानी हम उन्हें दो चीजों के लिए अपना प्रतिनिधि बनाते हैं। एक कानून बनाने के लिए और दूसरा प्रशासन के लिए। संपूर्ण समाधान प्रस्ताव के अनुसार उनके पास केवल एक ही काम होगा। वे केवल प्रशासन कर सकते हैं। कानून बनाने का अधिकार जनता के पास 24 x 7 रहेगा। कानून बनाने की शक्ति लोगों के पास रहेगी, इस शक्ति को कभी भी नेताओं को हस्तांतरित नहीं किया जाएगा। नेताओं का काम सिर्फ शोध करना और कानून का प्रस्ताव देना है, कानून को मंजूरी देने की शक्ति लोगों के पास रहेगी।

16

सुरक्षा और संरक्षण का अधिकार

प्रत्येक नागरिक के लिए सुरक्षा और संरक्षण का अधिकार। स्थिति-परिस्थिति अनुसार हर तरह की सुरक्षा मुहैया कराई जाएगी। स्वास्थ्य और चिकित्सा सुविधा, सहायता और समर्थन, सुरक्षा और न्यायपालिका जैसी सार्वजनिक सेवाओं के माध्यम से सभी नागरिकों के लिए पूर्ण सुरक्षा उपलब्ध होगी। प्रदान की जाने वाली सुरक्षा इकोलॉजी को ध्यान में रखेगी क्यूंकि उसी के उचित प्रबंधन से मानव जीवन सुरक्षित है। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई प्रणाली द्वारा सभी मानवीय संघर्षों की जड़ को मिटा दिया जाएगा।

क्या मानव की इच्छाओं को पूरा करने के लिए संसाधन दुर्लभ और सीमित नहीं हैं?

17

अभाव सर्वव्यापी नहीं है

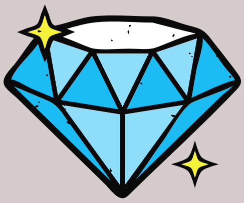

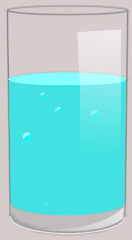

दुर्लभता या अभाव (Scarcity) को एक मूलभूत आर्थिक समस्या माना गया है। यह नियम कहता है मनुष्य की आवश्यकताएँ लगभग असीम हैं, जबकि साधन सीमित हैं। दुर्लभता (scarcity) का अर्थ है कि उपलब्ध संसाधन सभी मांगों और ज़रूरतों को पूरा करने में असमर्थ हैं। दुर्लभता और संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के कारण ही मौजूदा अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता है। अतएव यह विषय प्रेरकों और संसाधनों के प्रभाव में विकल्प का अध्ययन करता है।

हमारी खोज के अनुसार दुर्लभता का नियम जो अर्थशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक धारणा है, एक गलत अवधारणा है जो एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र की उपयोगिता और परिभाषा को विकृत करती है।

कमी, बहुतायत या पर्याप्तता उस काल में उपलब्ध टैकनोलजी और प्रबंधन मॉडल पर निर्भर करती है और सामाजिक-सांस्कृतिक आधार रखती है।

18

अभाव की अवधारणा के परिणाम

क्या अभाव अपरिहार्य है या यह केवल खराब प्रबंधन है?

अभाव का नियम हमें यह विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है कि trade-off मौजूद हैं और हमें बाजार की मांग के अनुसार संसाधनों को राशन करने की आवश्यकता है। इस प्रकार बाज़ार मूल्यांकन और मूल्य तंत्र उभरता है। मूल्य तंत्र स्वयं उस उद्देश्य को विफल कर देता है जिसके लिए इसे अपनाया गया था। यह मनुष्यों के सुख के लिए संसाधनों का कुशल आवंटन सुनिश्चित नहीं करता है बल्कि यह कृत्रिम अभाव पैदा करता है और कुछ फर्मों की लाभप्रदता के लिए संसाधनों का आवंटन करता है। इसका तात्पर्य है कि इन फर्मों के मालिक, केवल कुछ ही लोग विलासिता का जीवन जी पाते हैं और जनता जो इन फर्मों में काम करती है या बेरोज़गार रह जाती है उसे नुक्सान होता है। मूल्य तंत्र यह तय करने का अन्यायपूर्ण और जाहिल तरीका है कि क्या उत्पादित होगा, कैसे उत्पादन किया जाएगा और किसे क्या मिलेगा।

अधिकांश जनता एक सभ्य जीवन का खर्च भी नहीं उठा सकते हैं, हालांकि वे घंटों काम पर घिसते हैं, क्योंकि उनका बाज़ार मूल्य कम है और वे उच्च कीमत वाली वस्तुओं और सेवाओं का खर्च नहीं उठा सकते हैं। इस पृथ्वी पर अधिकांश लोगों को अच्छी स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा भी नहीं मिलती क्यूंकि वह महंगी है और फिर भी हमने सतत विकास की खोज में पृथ्वी के संसाधनों को इतना समाप्त कर दिया है कि जलवायु परिवर्तन हमारी सभ्यता के लिए एक वास्तविक खतरा बन चुकी है। इसलिए बाज़ार और मूल्य तंत्र हमें वह जीवन देने में विफल रहे हैं जो हम सभी चाहते हैं और यह केवल खराब अर्थशास्त्र के कारण है जो हमारे लिए फायदेमंद नहीं है।

सीमित संसाधन और अनंत चाहतों का विचार एक ऐसी व्यवस्था की ओर ले जाता है जहां नागरिकों से यह भी नहीं पूछा जाता कि वे क्या चाहते हैं। इस प्रकार नागरिकों की चाहना आर्थिक लक्ष्य तय करने के लिए कभी अनुवादित नहीं होती। इसका तात्पर्य यह है कि व्यवस्था का नागरिकों को संतुष्ट करने का लक्ष्य तक नहीं है और यह एक घोर अलोकतांत्रिक बात है। तो शुरुआत ही गलत है। नागरिकों के इनपुट के बिना कोई भी प्रणाली अपने लोगों को संतुष्ट करने के लिए उचित योजना और संसाधन प्रबंधन की दिशा में कैसे आगे बढ़ सकती है? लोग जो चाहते हैं उनका उत्पादन और वितरण किए बिना एक संतोषजनक, सार्थक जीवन असंभव है और अर्थशास्त्र एक निराशाजनक शास्त्र बना रहेगा।

19

मुद्रा और बाज़ार का नतीजा

- बाज़ार व्यवस्था में सीधे तौर पे केंद्रीकृत प्रबंधन एवं योजना कारगर नहीं। इससे संसाधानों का अपव्यय, बाज़ार में उतार-चढ़ाव और जलवायु तबाही चाहते हुए भी रोका नहीं जा सकता।
- आर्थिक असमानता, अर्थशास्त्र के ढाँचे में विद्यमान है। अधिकांश जनता के पास सामान और सेवाओं को खरीदने के लिए पैसे की कमी बनी रहेगी।
- पैसा सामाजिक असमानताओं, असुरक्षाओं और इस तरह अपराध की ओर ले जाता है।
- अनियंत्रित अधिकता और कमी, बाज़ार में उछाल और पतन के चरण निश्चित रूप से आएंगे।
- पैसा शक्ति केंद्र बनाता है और समान अधिकारों की अनुमति नहीं देता।
- पैसा सामाजिक-आर्थिक समस्याएं पैदा करता है।

मानव स्वभाव क्या है ? क्या मनुष्य की अनंत चाहतें हैं ?

20

इंसान की चाहत सीमित होती है

प्रत्येक व्यक्ति का एक सीमित फ्रेम होता है जिसमें कुछ पहलू दूसरों के साथ समान होते हैं और कुछ पहलु अनोखे होते हैं। एक सीमित फ्रेम इच्छाओं के सीमित सेट को जन्म देता है। इच्छाएं अकस्मात् ही नहीं बल्कि एक प्रक्रिया से प्रकट होती हैं, इसलिए वे अनंत नहीं हैं। तो हम क्यों सोचते हैं कि हमारी अनंत इच्छाएँ हैं? चूँकि आज की व्यवस्था में बहुत सी इच्छाएँ अधूरी रह जाती हैं और शिक्षा का अभाव है कि सुख आखिर क्या है जिस से एक गलत धारणा पैदा होती है कि इच्छाएँ अनंत हैं। जब यूएलएम ने एक विचार प्रयोग किया और प्रतिभागियों से अपनी इच्छाओं को लिखने के लिए कहा तो अधिकांश लोग सौ चाहतों को सूचीबद्ध करने में भी सक्षम नहीं थे। इससे हम समझ सकते हैं की इच्छाएं अनंत नहीं हैं बल्कि गलत व्यवस्था के कारण समाधित नहीं हो पा रहीं, इसलिए अतृप्ति का आभास हमारे background में बना रहता है।

21

मानव की इच्छाएं पूरी की जा सकती हैं

आज के अर्थशास्त्र की मुख्यधारा के विपरीत मानव की इच्छाएं तृप्त करने योग्य हैं और मानव सदैव अतृप्त रहेगा ऐसा सोचना गलत है। मानव जो चाहता है उसका एक तर्कसंगत आधार होता है। इच्छाएं हमारे पूरे जीवन में एक फ्रेम के भीतर बदलती हैं। मानवीय इच्छाएं सीमित हैं और इच्छा एक फ्रेम के भीतर दोहराती है जिसे उपलब्ध प्राकृतिक और मानव संसाधनों के साथ लगातार पूरा किया जा सकता है। इच्छाओं की अतृप्ति मानव स्वभाव का एक आधारहीन और गलत वर्णन है। यदि मानव इच्छाएं सदैव अतृप्त होतीं तो कोई तृप्त होने का प्रयास क्यों करता और मानव के समस्त प्रयत्नों का क्या अर्थ रह जाता ? यह बात उसे पता ही कैसे चलती तृप्ति क्या है अगर वह जीवन में कभी तृप्ति अनुभव ही नहीं किया होता ? वह कई बार तृप्त हुआ है इसलिए तृप्ति वास्तविकता है। मानव इच्छाओं की अतृप्ति एक अवैज्ञानिक और निरर्थक सिद्धांत है।

22

आक्रामकता खराब व्यवस्था का परिणाम है

नकारात्मक इच्छाएं जैसे दूसरों को नुकसान पहुँचाना , दूसरों का शोषण करना और दूसरों पर शासन करने की इच्छा खराब व्यवस्था में उत्पन्न होती है क्योंकि यह मानव की प्राथमिक प्रेरणा नहीं है। मूल प्रेरणा सुख के विषयों का भोग करना है। तो, एक उचित व्यवस्था में ऐसी नकारात्मक इच्छा पैदा नहीं होगी। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई व्यवस्था में एक का सुख दूसरे की कीमत पर नहीं आते बल्कि एक का सुख दूसरे के सुख का पूरक बनते हैं।

23

दूसरों से श्रेष्ठ होने की इच्छा हमारा मूल स्वभाव नहीं है

दूसरों से श्रेष्ठ होने की इच्छा आज की व्यवस्था द्वारा निर्मित एक अवांछित दबाव है। मौजूदा आर्थिक व्यवस्था ने लोगों के जीवन में कमी और असुरक्षा का भाव पैदा कर दिया है क्यूंकि कुछ ही लोग संपन्न हो सकते हैं। विलासिता को भोगने, मूल्यवान और सुरक्षित महसूस करने के लिए शीर्ष पर रहने का दबाव बनता है। जब इस प्रकार के मूल्य को सामाजिक मान्यता मिलती है तो लोग नकारात्मक प्रकार की सफलता की चाहत करने लगते हैं जहां वे दूसरों के सापेक्ष अधिक मूल्यवान होना चाहते हैं। यह सब मूल्यांकन पर बनी प्रणाली के कारण पैदा होता है।

नई व्यवस्था में दूसरों से श्रेष्ठ होने की इच्छा उत्पन्न नहीं होगी और इसका कोई अर्थ नहीं बचेगा क्योंकि बाज़ार द्वारा मूल्यांकन नहीं है। सभी लोगों का समान महत्व होगा और वे उस जीवन को जीने में सक्षम होंगे जिसमें वे रुचि रखते हैं। एक किसान भी एक वैज्ञानिक के जितना मूल्यवान होगा। आज का अर्थशास्त्र उच्च और निम्न मूल्यांकन बनाता है और सभी मनुष्यों की प्राथमिक इच्छा (जो कि एक सुखद जीवन जीना है) को दूसरों को हराने और उच्च मूल्य प्राप्त करने की एक अतिरिक्त इच्छा में विकृत करता है। हालांकि अमीर और ताकतवर भी असुरक्षित रहते हैं और जीवन का पूरा आनंद नहीं उठा पाते हैं। वे अपेक्षाकृत ग़रीब से बेहतर हैं लेकिन उनका जीवन भी परेशान रहता है। इस प्रकार तथाकथित श्रेष्ठता जीवन के अंतिम लक्ष्य को पूरा करने में मदद नहीं करती है। अमीर और शक्तिशाली के जीवन में असंतोष का मतलब वास्तविक लक्ष्य जो कि सुख है मूल्य तंत्र द्वारा प्राप्त नहीं हो पा रहा। अर्थशास्त्र की विफलता और समाधान की कमी को पहचानने के बजाय अनजाने ही दोष मनुष्यों पर मढ़ दिया जाता है। कहा जाता है कि हमारी अनंत इच्छाएं होती हैं और हम कभी भी तृप्त नहीं हो सकते। इस प्रकार आज का अर्थशास्त्र अपने मौलिक उत्तरदायित्व से दूर भागता है।

क्या मनुष्य आलसी नहीं और काम से दूर रहना चाहता है ?

24

हम सभी के रूचि होते हैं और हम अपने रूचि के क्षेत्र में काम करना पसंद करते हैं

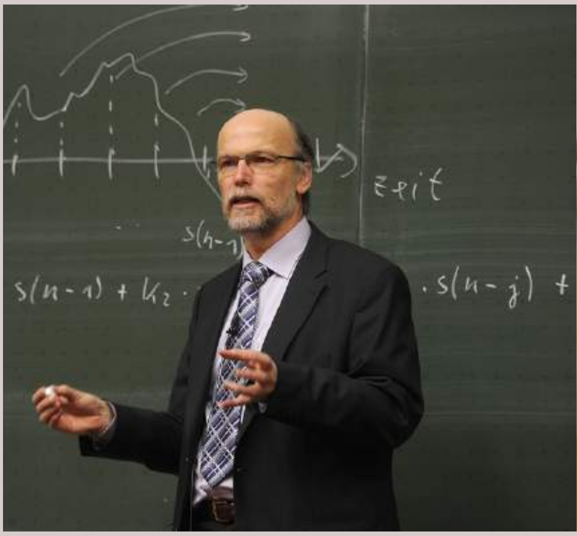

एक वैज्ञानिक के लिए खाना पकाना श्रमसाध्य हो सकता है और रसोइया के लिए वैज्ञानिक शोध भारी हो सकता है। यदि कोई व्यवस्था हमें हमारी पसंद का रोज़गार प्रदान करती है और सभी प्रकार के रोज़गार के लिए आय समान है, तो आलसी या गैर-ज़िम्मेदार बनने का कोई सवाल ही नहीं है। आलस्य एक ऐसे कार्य में जन्म लेता है जो हमारे लिए रूचिकर नहीं है। किसी भी मनुष्य में आलसी होने का स्वभाव मूल व्यक्तित्व का भाग नहीं होता। किन्हीं बातों के लिए वह रोमांचित होता है और किन्हीं के लिए नहीं। हर कोई सुख चाहता है और पसंद के कर्म करने का अपना एक सुख है।

कोई रोज़गार कठिन या आसान नहीं होता है, यह सिर्फ रुचि, क्षमता, योग्यता और कौशल की बात है। कोई कार्य किसी के लिए बहुत सरल और किसी के लिए बहुत कठिन हो सकता है। यदि किसी कार्य के लिए हममें रुचि, प्रतिभा, कौशल, क्षमता हो तो यह हमारे लिए बहुत आसान और सुखद हो जाता है। इसके विपरीत इन गुणों के अभाव में काम बहुत कठिन हो जाता है और दुख का कारण बनता है। तो, प्रस्तावित व्यवस्था में रोज़गार सुखद और व्यक्तित्व के अनुसार होगी।

प्रस्ताव के अनुसार यदि कोई वयस्क किसी उत्पाद/सेवा के निर्माण में भाग नहीं लेगा तो वह इस व्यवस्था का पूर्ण लाभ नहीं ले पाएगा। इस नियम के कारण आलसी और परजीवी बनने की गुंजाइश नहीं रहती। इस व्यवस्था का लाभ उठाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने चुने हुए कर्म को ठीक से पूरा करना है। दूसरा सभी को उनकी पसंद के अनुसार रोज़गार की पेशकश की जाएगी, वह भी सप्ताह में 5 दिन अधिकतम 5 घंटे के लिए।

हर कोई अपने काम में रस लेगा क्योंकि वह उनकी पसंद का है। जैसे हम विभिन्न उत्पादों का आनंद लेते हैं, वैसे ही पसंद के कर्म से भी सुख होता है। तीसरा कार्यस्थल बहुत दोस्ताना और सुख दायक होगा क्योंकि कोई भी मालिक नहीं बन सकता है और कोई गुलाम नहीं होगा। तो इन सभी कारकों के बदौलत लोगों के पास आलसी और परजीवी बनने का कोई कारण नहीं होगा। वे बहुत जीवंत रहेंगे क्योंकि वे अपने जीवन के हर पल का आनंद ले रहे होंगे और अपने कर्म की सार्थकता को जान रहे होंगे ।

सुख क्या है? व्यक्तिगत सुख के लिए व्यवस्था कैसे योजना बना सकता है?

25

सुख क्या है?

जीवन में हम सुख की और बढ़ना चाहते हैं और दुःख से दूर जाना चाहते हैं । संक्षेप में, जीवन का अंतिम लक्ष्य निरंतर सुख में रहना है। इच्छा अनुसार ज्ञान, कर्म और भोग के अनुभव को सुख के रूप में जाना जाता है। इस तरह के अनुभव से हमें अच्छा लगता है और इसलिए इसे सुख कहा जाता है। हमारी इच्छा के विपरीत ज्ञान, कर्म और भोग का अनुभव दुख के रूप में जाना जाता है। हमें इस तरह के अनुभव से अच्छा नहीं लगता और इसलिए यह दुख है।

26

इच्छाओं की चार श्रेणियां

जब जीवन हमारे सहज स्वभाव से उत्पन्न होने वाली इच्छा अनुसार आगे बढ़ता है तो हमें खुशी का अनुभव होता है। 4 तरीके हैं जिनसे हम सुख प्राप्त करते हैं- सीखने का रस (ज्ञान), काम करने का रस (कर्म), उपभोग करने का रस (भोग) और आराम करने का आनंद (विश्राम)।

ज्ञान

कर्म

भोग

विश्राम

27

सुख को परिभाषित कर विषयों को भोगा जा सकता है

ULM मानव चेतना की एक नई समझ प्रस्तुत करता है और बताता है कि सुख क्या है और कैसे एक अच्छी व्यवस्था द्वारा सभी के लिए प्राप्त कराया जा सकता है। बाहरी दुनिया का व्यक्तिगत अनुभव कैसे होता है, इसके बारे में मेरी जीवन दर्शन की पुस्तक में विस्तार से बताया गया है। चेतना के स्पष्ट ज्ञान से मानव की चाहतों को ठीक से व्यक्त किया जा सकता है और objective लक्ष्यों में अनुवाद किया जा सकता है। ULM नए जीवन दर्शन पर आधारित हैप्पीनेस का मॉडल प्रस्तुत कर रहा है जो की अर्थशास्त्र के सफल होने की बुनियाद बनेगा। बिना सुख के सही परिभाषा के अर्थशास्त्र की गाड़ी सही दिशा नहीं बढ़ सकती, चूँकि सारे सामाजिक क्रिया कलाप सुख तभी पैदा कर पाएंगे जब सुखों की सही परिभाषा एवं उसके कारकों का ज्ञान होगा।

28

सुख प्रबंधन के चार तल

मानव जीवन में सुखों के लिए योजना और प्रबंधन की आवश्यकता होती है, और यह प्रबंधन चार तलों पे करना पड़ता है। वे हैं व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और ecological system ।

व्यक्ति

परिवार

समाज

पर्यावरण

29

व्यक्तिगत सुख के चार तल

व्यक्तिगत सुख के चार स्तर होते हैं- शरीर के स्तर के सुख, मन के स्तर के सुख, भावनात्मक स्तर के सुख और चेतना के स्तर के सुख। वे अलग-अलग व्यक्तित्वों के लिए अलग-अलग अनुपात और प्राथमिकताओं में मौजूद हैं।

शारीरिक स्तर

मानसिक स्तर

भावनात्मक स्तर

चेतनात्मक स्तर

30

चार प्रकार के व्यक्तित्व

मानव व्यक्तित्व को मोटे तौर पर शरीर उन्मुख, मन उन्मुख, भावना उन्मुख और चेतना उन्मुख में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये चार प्रकार के झुकाव स्वाभाविक रूप से मौजूद हैं और सभी व्यक्तित्व समान रूप से मूल्यवान हैं

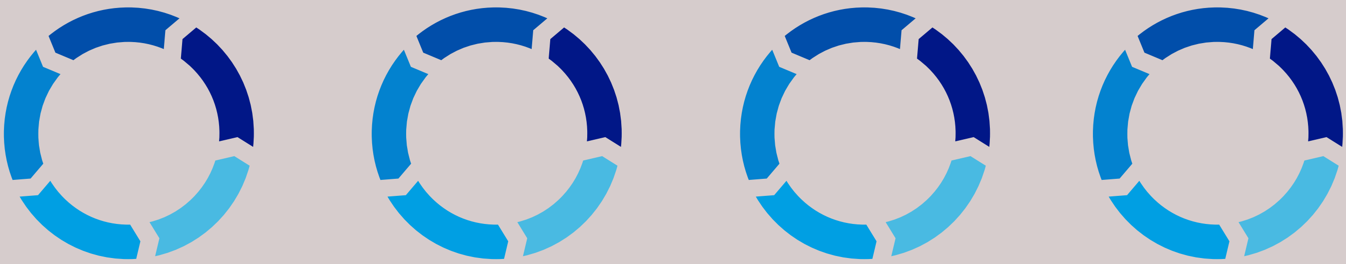

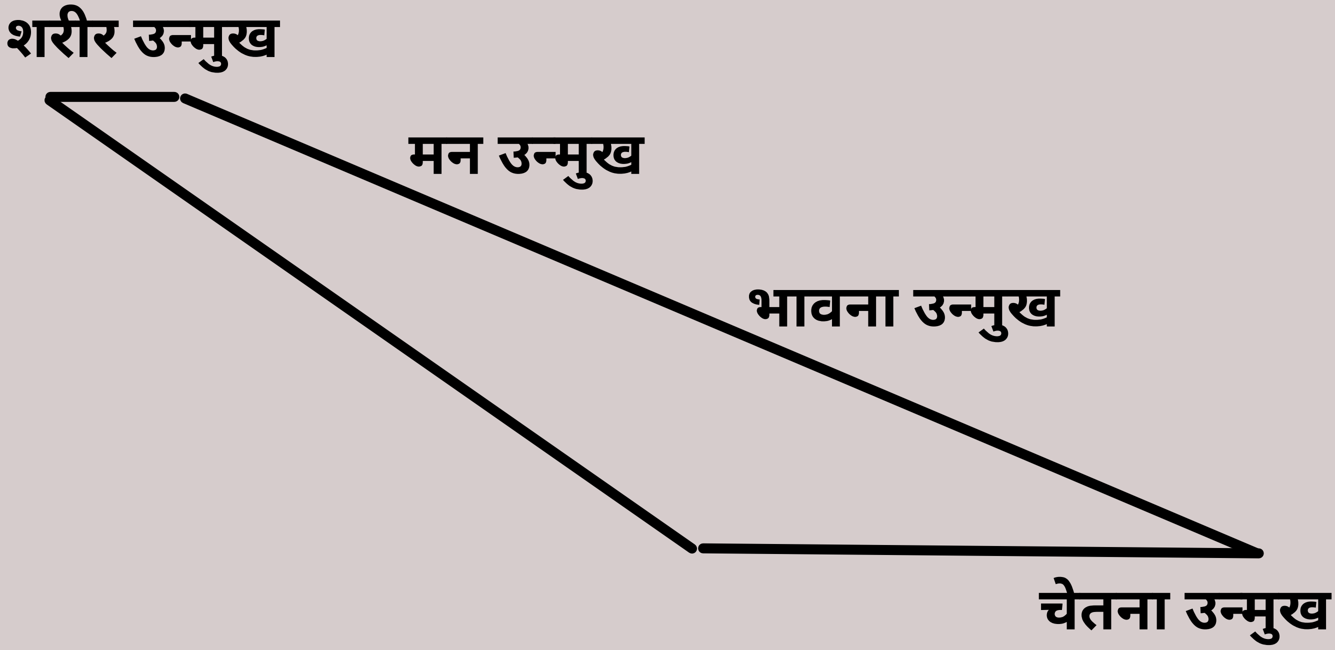

31

जीवन में चुनाव और निर्णय के स्वाभाविक तल

कोई भी मनुष्य जो भी कार्य और निर्णय लेता है, वह अपनी रुचि के अनुसार सुख को बढ़ाने और दुःख को कम करने का प्रयास करता है। <u>शरीर स्तर</u> के लिए व्यक्ति का दायरा स्वयं का सुख होता है, <u>मानसिक स्तर</u> के लिए व्यक्ति का दायरा परिवार का सुख होता है, <u>भावनात्मक स्तर</u> के लिए व्यक्ति का दायरा समाज का सुख होता है और <u>चेतना स्तर</u> के लिए व्यक्ति का दायरा पूरा विश्व है।

मैं

मेरा परिवार

मेरा समाज

मेरी पृथ्वी

32

हर व्यक्तित्व के सुख का अपना फ्रेम होता है

प्रत्येक व्यक्ति की पसंद और नापसंद का अपना फ्रेम होता है, उसकी रुचियों का अपना फ्रेम होता है। विभिन्न प्रकार के फ्रेम का ज्ञान होना महत्वपूर्ण है क्योंकि पूरी व्यवस्था को सभी प्रकार के मनुष्यों के लिए बनाया जा रहा है। इंसान को समझकर हम सिस्टम को डिज़ाइन कर सकते हैं ताकि हर फ्रेम को उसकी सहज रुचि के अनुसार निरंतर सुख मिले। विशेष रूप से अर्थशास्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को उपयुक्त रोज़गार और प्रत्येक कार्य उपयुक्त व्यक्ति द्वारा किया जाता हो।

• <u>शरीर उन्मुख व्यक्तित्व</u>

ऐसे लोग जो मुख्य रूप से स्वयं को अपने शरीर के रूप में अनुभव करते हैं, जो केवल अपने सुख और दर्द को महसूस करने में सक्षम हैं, केवल उन कार्यों में रुचि रखते हैं जो मुख्य रूप से केवल शारीरिक क्षमता से ही पूरे किए जा सकते हैं, उनकी दैनिक दिनचर्या की गतिविधियां स्वयं तक ही सीमित हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि ये शरीर उन्मुख व्यक्तित्व हैं। वे अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए गतिविधियों को करने के लिए तैयार पाए जाएंगे।

• मन उन्मुख व्यक्तित्व

ऐसे लोग जो अपने परिवार के सदस्यों के सुख-दुख को अपना मानते हैं, वे आम तौर पर अपने परिवार के सदस्यों की सुखों को अधिकतम करने और उनके दुखों को खत्म करने की दिशा में काम करते हैं। वे किन्हीं विषयों पर चिंतन और मनन करने में सक्षम पाए जाते हैं, उन विषयों या स्थितियों पर निर्णय या निष्कर्ष निकालने में सक्षम होते हैं, जिनमें से कुछ निर्णयों को वे अपने जीवन में अपनाने में भी सक्षम होते हैं। वे मानसिक रूप से विकसित, गणनात्मक और कुछ मायनों में बुद्धिमान होते हैं। इसका मतलब यह होगा कि वे दिमागी स्तर के व्यक्तित्व हैं। उनके 'मैं' का आकार या क्षेत्र उनके परिवार तक फैला हुआ है। वे अपने परिवार के कल्याण के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार पाए जाते हैं।

• भावना उन्मुख व्यक्तित्व

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो पूरे समाज के सुख-दुख को उसी तरह महसूस कर पाते हैं जैसे वे अपने या परिवार के लिए महसूस करते हैं और फिर सभी लोगों की खुशी बढ़ाने और उनके दुखों को खत्म करने का काम करते हैं। वे किसी भी विषय पर बहुत संजीदगी से विचार कर सकते हैं, उनके निर्णय और निष्कर्ष अधिकांश समय काफी सटीक होते हैं और वे हमेशा सत्य को स्वीकार या अपनाने के लिए तैयार रहते हैं।

वे बहुत जल्दी उस सच्चाई की ओर काम करते हैं, जिस क्षण उन्हें यह पता चलता है कि समाज के लिए क्या सही है और क्या अच्छा है। इसका मतलब यह होगा कि वे भावना-उन्मुख व्यक्तित्व हैं। ये अपने सभी रिश्तों को जबरदस्त अहमियत देते हैं। वे जो कुछ भी करते हैं उसे करने के लिए वे अपने आप को पूरी तरह से निवेश करते हैं। वे जो भी वादा करते हैं, उसे मरते दम तक पूरा करने का प्रयास करते हैं। उनकी एकमात्र चिंता है की वे कोई गलत प्रतिज्ञा या प्रतिबद्धता नहीं कर लें । उनके 'मैं' का आकार या क्षेत्र पूरे समाज तक फैला हुआ है। वे समाज के कल्याण के लिए कुछ भी करने को तैयार रहेंगे।

• चेतना उन्मुख व्यक्तित्व

यह ऐसे लोग हैं जो किसी भी विषय पर बहुत गहराई से चिंतन और मनन करने में सक्षम होते हैं और उसके सभी आयामों को समझने के बाद बहुत सटीक निर्णय या निष्कर्ष निकाल सकते हैं। एक बार निर्णय या निष्कर्ष हो जाने के बाद, वे उसे बहुत जल्दी स्वीकार कर सकते हैं और फिर अपने जीवन में उसी पर अमल कर सकते हैं। उनके अधिकांश कार्य एक कसौटी पर आधारित होते हैं, कसौटी यह की क्या वह कार्य समस्त जीवों के लिए फायदेमंद है या नहीं। वे दुनिया के सुख या दुख को वैसे ही महसूस करते हैं जैसे कोई अपने लिए, अपने परिवार या समाज के लिए महसूस करता है।

वे अन्वेषण और अनुसंधान-आधारित गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। स्वभाव से, वे अनुसंधान उन्मुख और वैज्ञानिक हैं। वे दूरदर्शी होते हैं और किसी भी निर्णय या नीति के भविष्य के प्रभावों की भविष्यवाणी कर सकते हैं। वे निष्पक्ष, अंतर्मुखी और चिंतनशील हैं। वे हमेशा सच्चाई का पक्ष लेते हैं। उनका हर कार्य या प्रोजेक्ट विश्व स्तर का या सभी प्राणियों और जीवों के लाभ के लिए होता है। इन्हें आत्मा स्तरीय व्यक्तित्व भी कहा जाता है। वे दूसरों में अपना स्वयं या सार देखने में सक्षम हैं। वे ज्ञान और ज्ञान के भंडार हैं। उनमें विवेक और धैर्य का गुण होता है। इस तरह के लक्षणों का मतलब यह होगा कि वे चेतना-उन्मुख व्यक्तित्व हैं। उनके 'मैं' का आकार पूरी दुनिया में फैला होता है जिसमें सभी जीव जंतु भी आते हैं। वे सभी जीवों के कल्याण के लिए तत्पर पाए जाएंगे।

सही अर्थशास्त्र क्या है जो सभी के लिए सुख पैदा करता हो?

33

अर्थशास्त्र क्या है?

अर्थशास्त्र optimal संसाधन प्रबंधन है जो मानव प्रकृति की समझ का उपयोग करते हुए, सुख के कारकों का input करते हुए, सभी के लिए सुख के लक्ष्य को अधिकतम करने के लिए योजना पद्धति एवं तकनीक बताता है।

'अर्थशास्त्र' शब्द संस्कृत शब्दों अर्थ और शास्त्र की संधि से बना है। शास्त्र का अर्थ - किसी विषय के संबंध में मनुष्यों के कार्यो के क्रमबद्ध ज्ञान को उस विषय का शास्त्र कहते हैं। अब, अर्थ क्या है? सुख के लिए सामाजिक प्रयास से सांस्कृतिक रूप से जो कुछ भी बनता है उसे अर्थ के रूप में जाना जाता है।

जो भी उत्पाद और सेवाएं हमारे लिए सुख पैदा करती हैं, उन्हें अर्थ के रूप में जाना जाता है। ज्ञान जो सुख पैदा करता है, जो कार्य (कर्म) हमारे लिए सुख पैदा करता है, जो उत्पाद / सेवाएं (भोग) हमारे लिए सुख पैदा करते हैं, वह सब अर्थ है। पर्यावरण, सुविधाएं जो हमें कार्य करने और विश्राम लेने के लिए सक्षम बनाती हैं उसे भी अर्थ कहते हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक, समाज और पर्यावरण स्तर की इच्छाओं को पूरा करने के लिए अर्थ के मांग, उत्पादन और वितरण प्रणाली को अर्थशास्त्र कहते हैं। सरल शब्दों में, अर्थशास्त्र एक ऐसी प्रणाली है जो हमें अपनी इच्छाओं को रखने का सिस्टम आधारित तरीका देती है, उन इच्छाओं को पूरा करने हेतु आवश्यक ज्ञान को एकीकृत करने के लिए एक तंत्र प्रदान करती है जिससे प्रोडक्शन हेतु उचित संसाधन आवंटन हो और एक वितरण व्यवस्था ताकि नागरिक लगातार अपने जीवन में संतुष्टि का अनुभव कर सकें। अर्थ भी मूल्य का पर्याय है और इसलिए अर्थशास्त्र मूल्य सृजन के लिए संसाधन प्रबंधन है।

34

नया अर्थशास्त्र बाज़ार रहित है

निजी मालिकों के रूप में एक दूसरे के साथ वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान करने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई निजी व्यवसाय नहीं होगा। इस प्रणाली में लोगों के बीच कोई व्यापार नहीं है। कोई मौद्रिक विनिमय नहीं है, न ही कोई वस्तु विनिमय। लोगों के बीच आपस में बेचने और खरीदने के लिए कोई बाज़ार नहीं है। सभी लोगों की मांग को पूरा करने के लिए एक एकीकृत प्रणाली द्वारा सब कुछ का उत्पादन और वितरण किया जाएगा। केंद्रीकृत प्रबंधन संसाधनों के प्रबंधन का सबसे अच्छा तरीका है।

35

संसाधनों पर कोई निजी स्वामित्व नहीं है

सभी संसाधन व्यवस्था के पास रहेंगे, अर्थात् मानव संसाधन और प्राकृतिक संसाधन दोनों। मांग के अनुसार उत्पादन के लिए, मानव संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों का संजोग करके सभी की इच्छाओं की पूर्ति होती रहेगी। एक इंटेलीजेंट डिज़ाइन के तहत, लोग अपनी मांगो को पूरा करने के लिए ख़ुद ही अपना इच्छित काम करेंगे। यह व्यवस्था मनुष्य स्वार्थ के अनुसार है, इसलिए मनुष्य को सबसे सुगम रास्ते उसके इच्छित सुखों तक पहुंचाती है।

36

नई आर्थिक व्यवस्था केंद्रीय रूप से नियोजित है

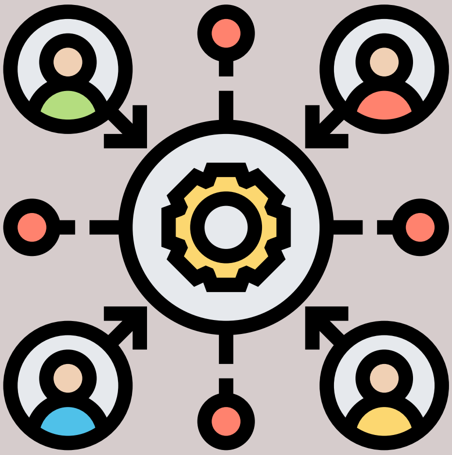

सभी नागरिकों के सुखों को एक केंद्रीय नियोजित आर्थिक मॉडल का उपयोग करके पूरा किया जा सकता है जो बदलती प्राथमिकताओं, प्रौद्योगिकी और संस्कृति के अनुकूल हो सकेगा। यह केंद्रीय रूप से नियोजित मॉडल सबसे अधिक responsive डिज़ाइन है और मानव की जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों का सबसे अच्छा उपयोग करता है।

नागरिक तय करेंगे कि वे क्या चाहते हैं लेकिन केंद्रीय प्लानिंग का उपयोग उत्पादों / सेवाओं के मानकीकरण और कुशल उत्पादन और वितरण के लिए किया जायेगा।

37

सभी की एक डिजिटल प्रोफ़ाइल होगी

इस व्यवस्था में सभी का ऑनलाइन प्रोफाइल होगा जिसमें उनके बारे में सब कुछ लिखा हुआ होगा जैसे कि उनका नाम, उनका एड्रेस, उनकी आयु, उनका फोटो, उनकी योग्यता, उनकी दक्षता, उनकी पसंद, उनकी नापसंद, आदि आदि।

38

आप बिना पैसे के ऑर्डर दे सकते हैं

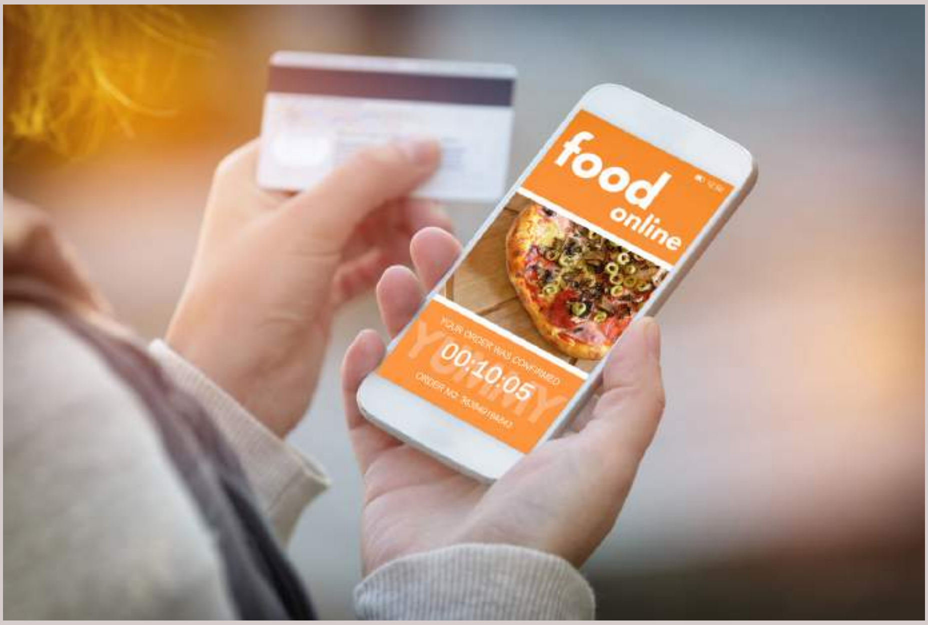

विभिन्न उत्पादों / सेवाओं के लिए लोग अपना ऑनलाइन खाता बना सकते हैं और अपनी मांग रख सकते हैं। अनपढ़ लोगों के लिए भी सरल प्रक्रिया और सहायता उपलब्ध होगी। सभी कुछ मांग करने के लिए यह केंद्रीकृत ऑनलाइन सिस्टम ही होगा।

39

सभी सुखों को परिभाषित कर आर्थिक लक्ष्य तय किये जाएंगे

नागरिकों के व्यक्तिगत सुखों को एक वैज्ञानिक पद्धति द्वारा वांछित उत्पादों / सेवाओं में अनुवादित किया जाएगा और फिर एक गणितीय पद्धति द्वारा आर्थिक लक्ष्यों में अनुवादित किया जाता रहेगा। यह अनुवाद यूएलएम द्वारा बनाए गए मानव प्रकृति के सुख के मॉडल पर आधारित होगा ।

40

नागरिक अपनी मांग सेंट्रल पोर्टल पर दर्ज़ कर सकते हैं

सभी की मांग व्यवस्था तक निरन्तर पहुँचती रहेगी और ऑर्डर के क्रम से व्यवस्था उत्पादों का निर्माण और डिलीवरी करती रहेगी। केंद्रीय योजना गणितीय formulations **द्वारा एवं नागरिकों एवं वर्कर्स के** real-time data input **के आधार पर संभव हो सकेगा। व्यक्तिगत चाहतों का प्रत्यक्ष फ़ीड न केवल** socialist calculation debate **को समाधित करता है, बल्कि मांग के पूर्वानुमान के लिए सही शुरुआती बिंदु भी है। अगर सिस्टम नागरिकों से यह नहीं पूछता कि वे क्या चाहते हैं तो कोई सिस्टम कैसे जान सकता है कि क्या उत्पादन करना है? अब तक, किसी भी आर्थिक मॉडल ने नागरिकों को उनकी इच्छाओं को पेश करने तक की अनुमति नहीं दी, चाहे वह समाजवादी कमांड अर्थव्यवस्था हो या बाज़ार अर्थव्यवस्था। न ही इन मॉडल्स में स्पष्ट समझ थी कि सुख क्या होता है , इसलिए कोई फ्रेम भी न तैयार कर सके यह जानने के लिए की पब्लिक वास्तव में क्या चाहती है। इसका तात्पर्य यह है कि पहले के व्यवस्थापकों ने कभी भी जनता के लिए संपन्नता की संभावना नहीं बनाई और और यह अलोकतांत्रिक बात है।**

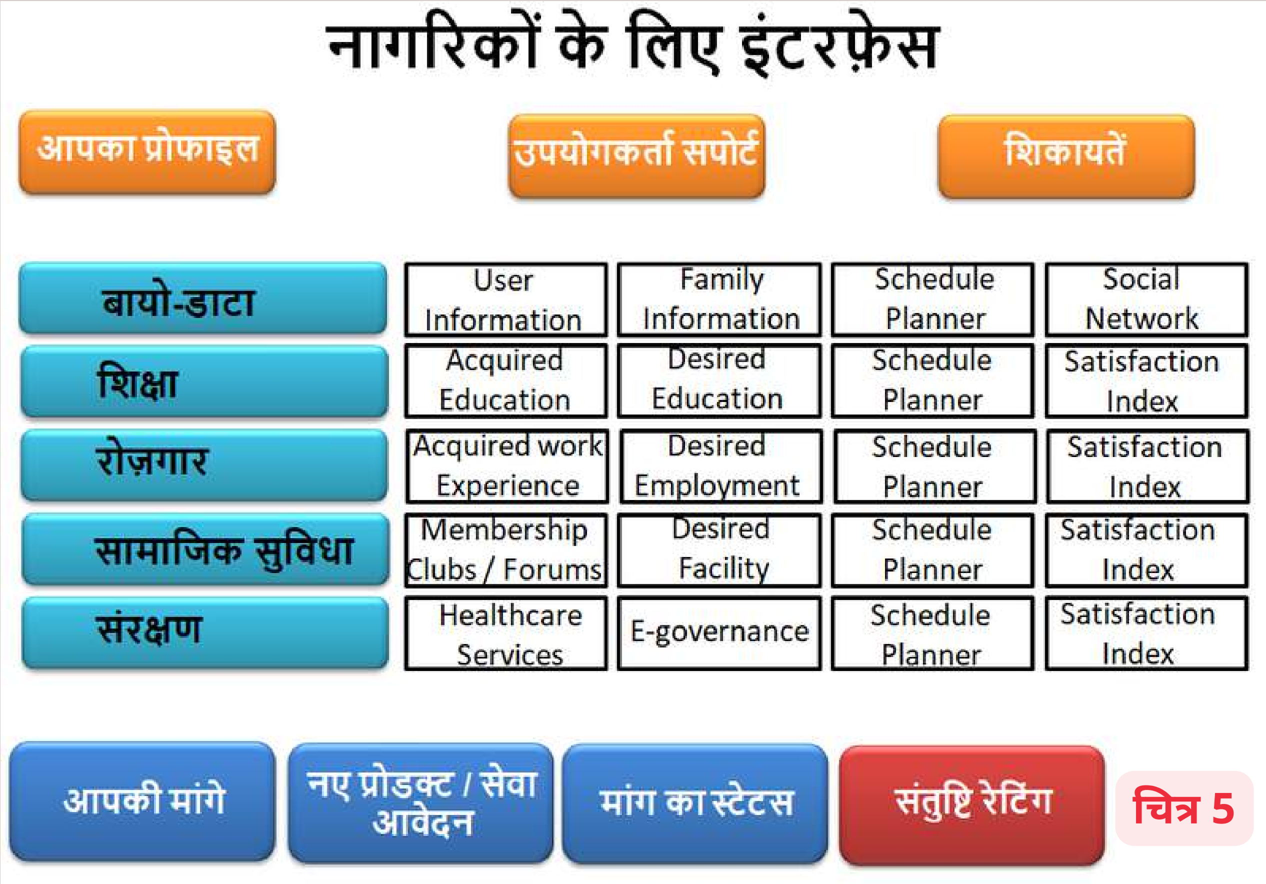
नागरिकों के लिए इंटरफ़ेस
आपका प्रोफाइल
उपयोगकर्ता सपोर्ट
शिकायतें
बायो-डाटा
User Information
Family Information
Schedule Planner
Social Network
शिक्षा
Acquired Education
Desired Education
Schedule Planner
Satisfaction Index
रोज़गार
Acquired work Experience
Desired Employment
Schedule Planner
Satisfaction Index
सामाजिक सुविधा
Membership Clubs / Forums
Desired Facility
Schedule Planner
Satisfaction Index
संरक्षण
Healthcare Services
E-governance
Schedule Planner
Satisfaction Index
आपकी मांगे
नए प्रोडक्ट / सेवा आवेदन
मांग का स्टेटस
संतुष्टि रेटिंग

चित्र 5

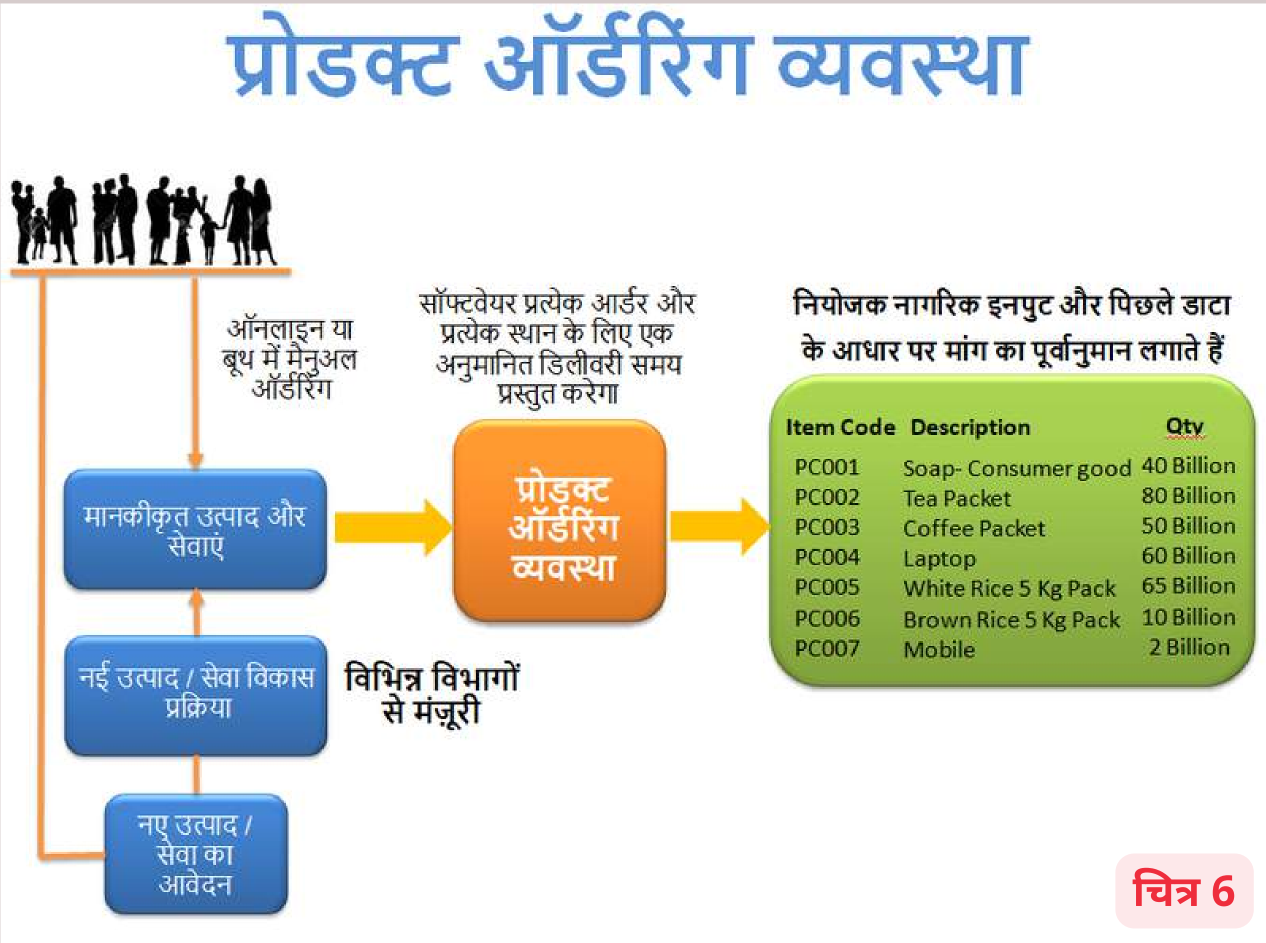
प्रोडक्ट ऑर्डरिंग व्यवस्था
ऑनलाइन या बूथ में मैनुअल ऑर्डरिंग
सॉफ्टवेयर प्रत्येक आर्डर और प्रत्येक स्थान के लिए एक अनुमानित डिलीवरी समय प्रस्तुत करेगा
नियोजक नागरिक इनपुट और पिछले डाटा के आधार पर मांग का पूर्वानुमान लगाते हैं
मानकीकृत उत्पाद और सेवाएं
प्रोडक्ट ऑर्डरिंग व्यवस्था
Item Code Description Qty
PC001 Soap- Consumer good 40 Billion
PC002 Tea Packet 80 Billion
PC003 Coffee Packet 50 Billion
PC004 Laptop 60 Billion
PC005 White Rice 5 Kg Pack 65 Billion
PC006 Brown Rice 5 Kg Pack 10 Billion
PC007 Mobile 2 Billion
नई उत्पाद / सेवा विकास प्रक्रिया
विभिन्न विभागों से मंज़ूरी
नए उत्पाद / सेवा का आवेदन

चित्र 6

41

कीमतों के बिना एक नया अर्थशास्त्र लेकिन एक नए तरह का हिसाब रहेगा

नई आर्थिक प्रणाली में बाज़ार मूल्यांकन नहीं है, वस्तुओं और सेवाओं पर कीमतें नहीं हैं, लेकिन व्यक्तिगत सुख को अधिकतम करने के लिए संसाधनों के प्रबंधन हेतु गैर-मौद्रिक गणितीय माप होंगे। आर्थिक गतिविधियों की निगरानी के लिए इन मापों का इस्तेमाल होगा।

व्यवस्था का ज़ोर व्यक्ति को उसका इच्छित सुख प्रदान करना है और यह तुलना करना नहीं कि कौन अधिक योग्य है। इस व्यवस्था में, प्रत्येक प्राणी जो चाहता है उसका हकदार है। व्यवस्था लोगों के लिए बनाई गई है और लोगों को अनिच्छा से किसी शोषणकारी व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। सिस्टम आपको आपकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए सुविधा प्रदान करेगा, आपको सिस्टम का गुलाम होने की आवश्यकता नहीं है। आप जिस जीवन को जीना चाहते हैं उसे जीने के लिए आपको मूल्य (मूल्य के माप के रूप में धन) अर्जित करने या अधिकार अर्जित करने की आवश्यकता नहीं है। सारे अधिकार आपको जन्म से ही मिलेंगे।

आपको सुखों का हक़दार होने के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी, धन एकत्रित करने की ज़रूरत नहीं। यदि व्यवस्था नागरिकों को उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं बनाती है, खासकर यदि यह स्पष्ट है कि उपलब्ध संसाधनों और प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है, तो इसे एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था के रूप में घोषित किया जा सकता है। दूसरी ओर, यदि व्यवस्था हर किसी को अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने में सक्षम बना रही है, तो यह एक न्यायसंगत व्यवस्था है। 25-50 वर्ष की आयु के बीच के वयस्क व्यक्ति के लिए एकमात्र आवश्यकता यह है कि वह किसी न किसी रूप में रोज़गार लेकर व्यवस्था में भाग लेता रहे। इस सहयोग के बिना उसे पूर्ण लाभ नहीं मिल सकता। अत: उसे अपनी रुचि का कार्य चुनकर जीवन के सारे मज़े मिलते रहेंगे।

42

बाज़ार मूल्यांकन के बिना एक नया अर्थशास्त्र

बाज़ार मूल्यांकन अन्यायकारी है

नई आर्थिक प्रणाली धन विहीन या गैर-मौद्रिक है। वस्तुओं और सेवाओं की कोई कीमत नहीं है। व्यक्ति को उत्पादों/सेवाओं के लिए ऑर्डर देने के लिए कोई पैसा देने की आवश्यकता नहीं है और न ही किसी को उस काम के लिए कोई वेतन मिल रहा है जो वह करता है। यह नया अर्थशास्त्र इस सिद्धांत पर आधारित नहीं है की जितने मूल्य का काम किया उतना मूल्य आपको मिलना चाहिए। क्यूंकि ऐसे मूल्याङ्कन का कोई वास्तविक आधार नहीं हो सकता, इसलिए ऐसा कोई मूल्याङ्कन नहीं रखा गया। ऐसे झूठे मूल्याङ्कन से उंच नीच ही पैदा होगी। जब हम पैसे की ऐसी पूर्व शर्त लगाते हैं, तो हम उस मुख्य लक्ष्य से भटक जाते हैं जिसके लिए एक सामाजिक व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिए।

बाज़ार मूल्याङ्कन प्रणाली से हम मुख्य लक्ष्य से भटक जाते हैं के प्रत्येक मानव एक सुरक्षित वातावरण में इच्छित ज्ञान, कर्म, भोग और विश्राम का सुख लेना चाहता है। पैसे की पूर्व शर्त से, हम मनुष्य को उसकी इच्छाओं को पूरा करने के अधिकार से वंचित कर रहे हैं। हम उसे सक्षम नहीं कर रहे हैं बल्कि उसे जीवन के सुख भोगने के लिए कीमत चुकाने को कह रहे हैं। व्यवस्था उसकी इच्छाओं की पूर्ति की सुविधा नहीं दे रही है, बल्कि सभी मनुष्यों को मांग करने से पहले अपने अधिकार अर्जित करने या मूल्य अर्जित करने को कह रही है। यह मूल समस्या है। सभी मनुष्यों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए व्यवस्थागत प्रबंधन के बजाय मौजूदा अर्थशास्त्र का प्रारंभिक बिंदु विकल्प की दुविधा है जो संसाधनों की कमी की कल्पना के कारण उत्पन्न होती है। यह गलत धारणा है कि मनुष्य की असीमित इच्छाएँ होती हैं लेकिन उस इच्छा को पूरा करने के साधन सीमित हैं। इसलिए, हम गलत तरीके से मानते हैं कि सीमित साधनों के साथ सभी मानवीय इच्छाओं को पूरा करना असंभव है और इसलिए अर्थशास्त्र ट्रेड-ऑफ की बात करता है। अर्थशास्त्र कहता है आप क्या खोने के लिए तैयार हो कुछ पाने के लिए? क्या कीमत चुकाने के लिए तैयार हो? इस लिए अर्थशास्त्र विकल्पों के बारे में एक विषय बन जाता है और विकास की गलत परिभाषा के साथ अंधी दौड़ में लग जाता है जहां इंसान के सुख केंद्रीय लक्ष्य नहीं। यह एक ऐसी व्यवस्था की ओर ले जाता है जहाँ जनता अपनी साधारण इच्छाओं को पूरा करने के योग्य नहीं बचती और केवल कुछ ही लोग पृथ्वी के संसाधनों के स्वामी बने फिरते हैं।

43

सभी रोज़गार का समान मूल्य होगा

नई व्यवस्था को इस तरह से रचा गया है जो इन सभी प्रकार के व्यक्तित्वों के लिए उनके प्राकृतिक रुचियों के अनुसार सुखद, सार्थक और सुविधाजनक जीवन को सक्षम बनाता है। व्यवस्था को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि व्यक्तित्व अपने स्वार्थ का पीछा करते हुए स्वचालित रूप से एक दूसरे के पूरक बन जाएंगे और समान रूप से मूल्यवान होंगे।

स्व उन्मुख

परिवार उन्मुख

समाज उन्मुख

विश्व उन्मुख

44

रोज़गार की चार श्रेणियां

नई व्यवस्था में सभी प्रकार के व्यक्तित्व के स्वाभाविक रुचि के अनुसार रोज़गार की चार श्रेणियां हैं।

कृषि और संबंधित उत्पादन सेवाएं

उद्योग और अन्य व्यावसायिक सेवाएं

प्रशासन और संबंधित सामाजिक सेवाएं

नीति निर्माण और संबंधित नेतृत्व सेवाएं

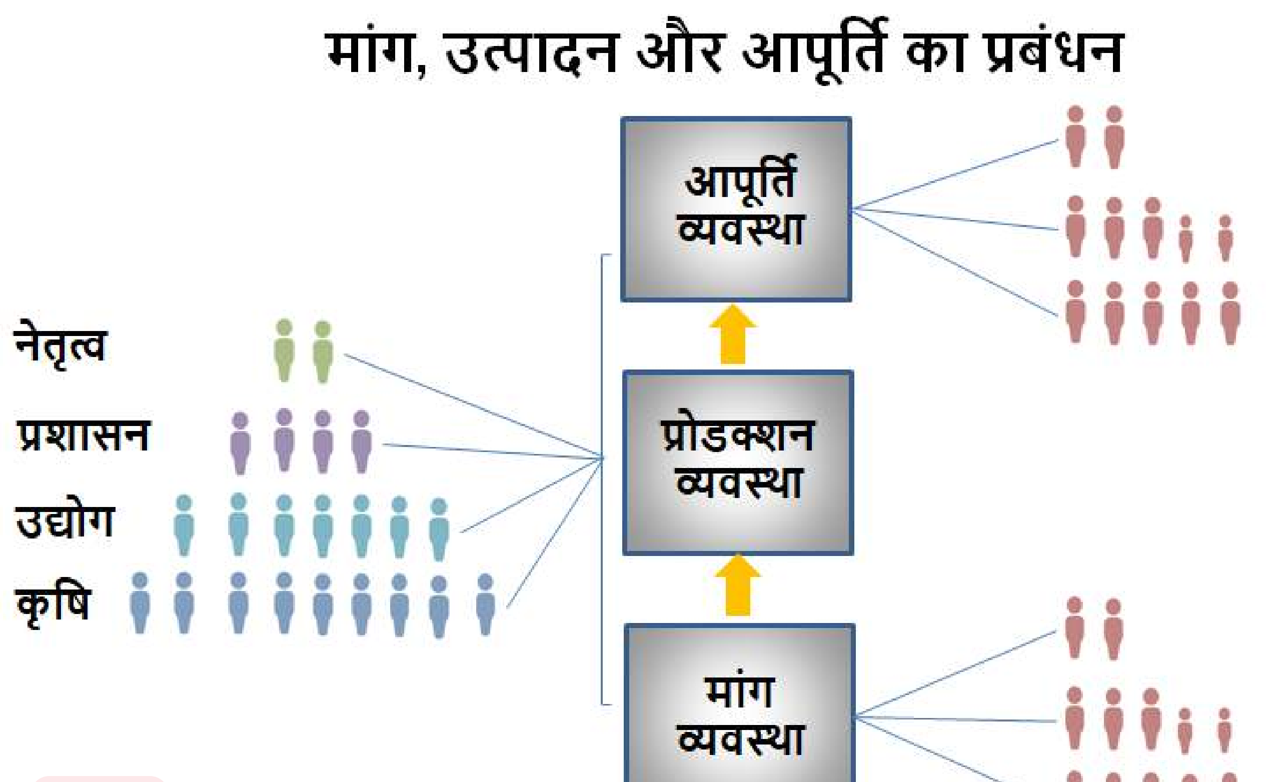
मांग, उत्पादन और आपूर्ति का प्रबंधन
आपूर्ति व्यवस्था
प्रोडक्शन व्यवस्था
मांग व्यवस्था
नेतृत्व
प्रशासन
उद्योग
कृषि

चित्र 7

आर्थिक गतिविधियाँ और रोज़गार की श्रेणियाँ
संस्था प्रमुख, नीति निर्माता,हर क्षेत्र के अनुसंधान प्रमुख, न्यायाधीश आदि।
Leadership
Consciousness Quotient
Tier 1-Advanced
Tier 2-Intermediate
Tier 3-Beginner
शिक्षक, डॉक्टर, संगीत और कला के उस्ताद, ऐसे सभी कार्य जिनमें सामाजिक चेतना दरकार होती है
Administration
Emotional Quotient
Tier 1-Advanced
Tier 2-Intermediate
Tier 3-Beginner
सभी तरह के पेशेवर, कलाकार, इंजीनियर, तकनीशियन
Professional Services
Intelligence Quotient
Tier 1-Advanced
Tier 2-Intermediate
Tier 3-Beginner
उत्पादक, किसानी सम्बंधित काम.
Agriculture, Animal Husbandry
Physical Quotient
Tier 1-Advanced
Tier 2-Intermediate
Tier 3-Beginner

चित्र 8

45

आर्थिक नियोजन का आधार

यूएलएम की खोज मानव चेतना के आतंरिक प्रक्रिया को परिभाषित करती है और यह ज्ञान, सिस्टम डिज़ाइनरों को सुख सुविधाओं का एक व्यापक फ्रेम स्थापित करने में सक्षम बनाता है। चेतना के ज्ञान पर आधारित एक सर्वस्वीकृत system development program **के अंतर्गत <u>सुखों का फ्रेमवर्क</u> बनेगा जिसमें विशिष्ट विकल्प नागरिक स्वयं पोर्टल पर अपनी व्यक्तिगत मांग रखते हुए करेंगे। ये लाइव इनपुट मांग** forecast **तैयार करने में मदद करेंगे। एक बार जब व्यक्तिगत इच्छाओं को** objective **लक्ष्यों में बदल दिया जाता है, तो यह नेताओं को मापन योग्य लक्ष्यों पर कार्य करने और गणना करने में मदद करेगा और प्लानर्स आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए गणना कर सकेंगे। आर्थिक नियोजन के तीन स्तर होंगे** - detailed plan, strategic plan **और** macro-economic plan.

46

अर्थशास्त्र की मुख्य समस्या

अगर मूल्य तंत्र नहीं तो आर्थिक गणना क्या है और कैसे होगी ? मनुष्य की चाहतों, सीमित संसाधनों और विशिष्ट बाधाओं के आधार पर planning problem formulate **होगा जिसका एक** optimal **लक्ष्य होगा। आर्थिक लक्ष्य तय किया जायेगा** ULM **के हैप्पीनेस मॉडल पे आधारित एक गणितीय विधि द्वारा। आर्थिक गणना अनिवार्य रूप से उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक** planning problem **है और इसमें गणित की विभिन्न शाखाएँ,** systems **और** control **के सिद्धांत, स्व-शिक्षण और होमिओस्टेटिक तंत्र, सर्वो तंत्र और ऑटोमेटा, सूचना और निर्णय लेने के सिद्धांत, गणितीय** linear programming **व** optimization **के सिद्धांत को इस्तेमाल किया जायेगा। योजना का गणितीकरण, दिए गए प्राकृतिक बाधाओं के तहत उपलब्ध संसाधन विकल्पों के साथ** happiness function **को अधिकतम करेगा। सिस्टम** material balance planning **विधि और ऐसे** algorithms **का उपयोग करेगा जो विभिन्न वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों को इनपुट करता हुआ और सुख के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गणित और विभिन्न अन्य विज्ञानों, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके संसाधन आवंटन का** optimal **हल निकालता हो।**

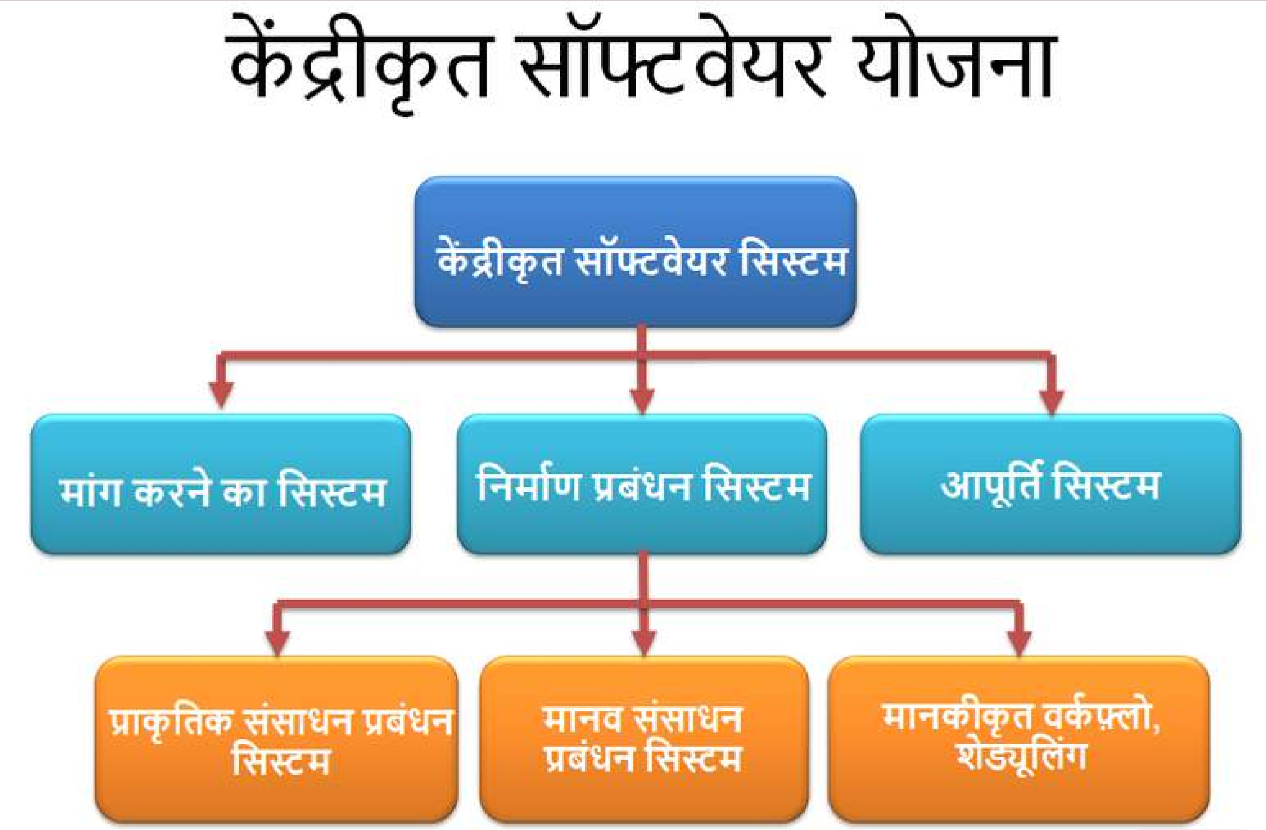

केंद्रीकृत सॉफ्टवेयर योजना
केंद्रीकृत सॉफ्टवेयर सिस्टम
मांग करने का सिस्टम
निर्माण प्रबंधन सिस्टम
आपूर्ति सिस्टम
प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन सिस्टम
मानव संसाधन प्रबंधन सिस्टम
मानकीकृत वर्कफ़्लो, शेड्यूलिंग

चित्र 9

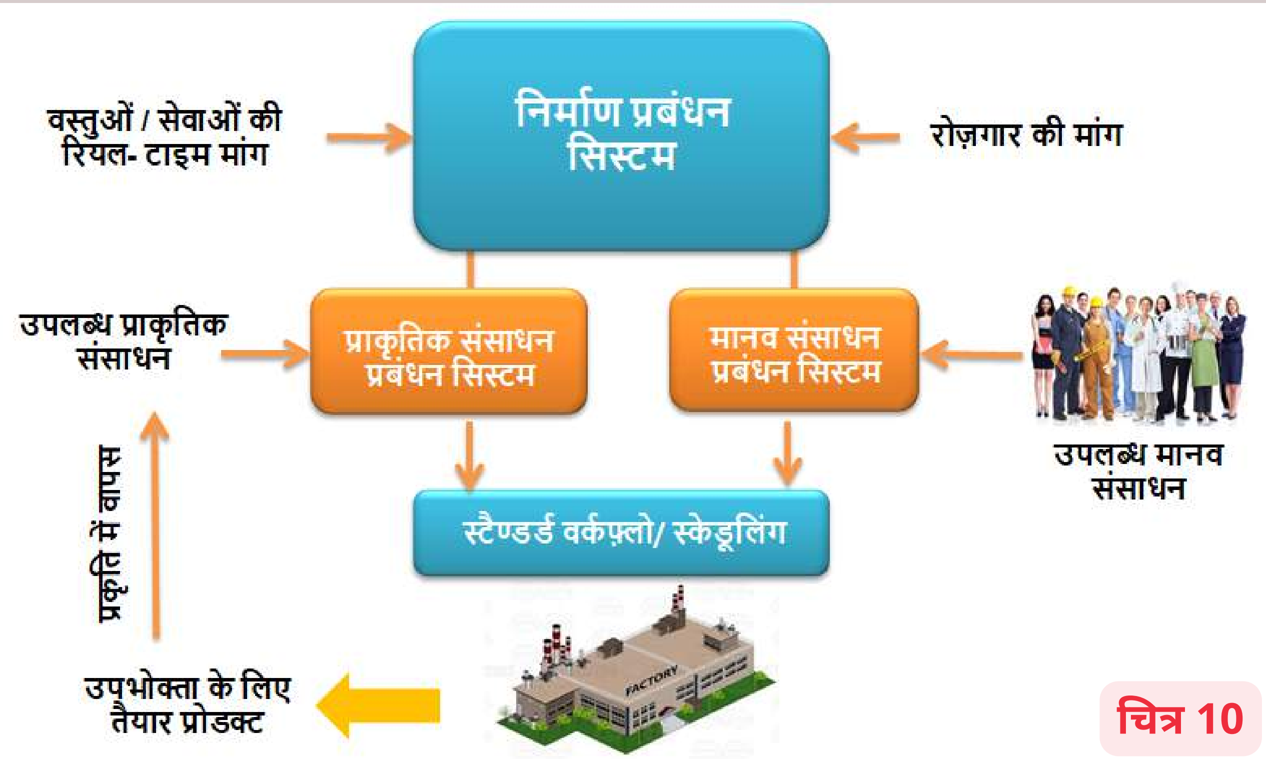

वस्तुओं / सेवाओं की रियल- टाइम मांग
निर्माण प्रबंधन सिस्टम
रोज़गार की मांग
उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन
प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन सिस्टम
मानव संसाधन प्रबंधन सिस्टम
उपलब्ध मानव संसाधन
प्रकृति में वापस
स्टैण्डर्ड वर्कफ़्लो/ स्केडूलिंग
उपभोक्ता के लिए तैयार प्रोडक्ट

चित्र 10

47

कीमतों के बिना कोई आर्थिक निर्णय कैसे ले सकता है?

<u>अर्थशास्त्र का मौजूदा प्रतिमान-</u>

अभाव की परिभाषा सभी सामान पर लागू होती है जहां उस सामान की एक इकाई का उपयोग करने का निर्णय कुछ अन्य संभावित उपयोग को छोड़ना होता है। इस प्रकार वैकल्पिक उपयोगों के बीच एक उपयोग का चुनाव होता है, और चुने गए किसी भी उपयोग के लिए एक opportunity cost **है।** Opportunity cost **का मतलब है उन वैकल्पिक उपयोगों के बीच में से सबसे अच्छा उपयोग जिसे चुना नहीं गया, इस प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में कि चुने गए उपयोग को चुना गया था। अगर मेरे पास ज़मीन का एक प्लॉट है, और मैं इसे गोल्फ कोर्स के लिए इस्तेमाल करना चाहता हूं, और अगर गोल्फ कोर्स के लिए इसका इस्तेमाल करने के अभाव में इसका इस्तेमाल आम उगाने के लिए किया जाएगा, तो यह जमीन दुर्लभ है, और बिन उगाए आम हैं गोल्फ के खेल की** cost**। अभाव के बिना कोई** cost **नहीं है; बिना** cost, **कोई अभाव नहीं। इस प्रकार किसी को आश्चर्य हो सकता है कि बिना कीमतों के कोई आर्थिक निर्णय कैसे ले सकता है। आखिरकार,** costs **सामान्य इकाई हैं जो विभिन्न विकल्पों की तुलना करने में मदद करती हैं।**

अर्थशास्त्र का नया प्रतिमान-

नए प्रतिमान में, अर्थशास्त्र का प्रारंभिक बिंदु अभाव नहीं है। प्रारंभिक बिंदु मानव चाहतें हैं। तो मांग का आंकलन किया जाएगा, उदाहरण के लिए : यह निर्धारित करने के लिए कि कितने गोल्फ कोर्स और कितने टन आम के उत्पादन की ज़रूरत है। इस उत्पादन के कई तरीके हो सकते हैं और यह निर्धारित करने के लिए कि कौन सा तरीका सबसे अच्छा है, हम कीमतों का उपयोग नहीं करेंगे। कीमतें हमें यह जानकारी नहीं देती हैं कि किसी विशेष प्रक्रिया को चुनना समाज के लिए अधिक फायदेमंद क्यों है और कोई अन्य प्रक्रिया कम फायदेमंद क्यों है। cost efficient होने का मतलब यह नहीं है कि यह सबसे अच्छा विकल्प है क्योंकि cost में समाज के लिए सुख पैदा करने वाली जानकारी शामिल नहीं है। यद्यपि मूल्य तंत्र के लिए उद्धृत उद्देश्य यह है कि यह सामाजिक लक्ष्य के लिए सर्वोत्तम संभव निर्णय लेने में मदद करता है लेकिन परिणाम एक अलग कहानी बताते हैं। हर कोई किफ़ायती होने की कोशिश कर रहा है फिर भी लोगों की दुर्दशा यह है कि अधिकांश ग़रीब दुखी हैं और पर्यावरण की खस्ता हालत है। अब मूल्य निर्धारण के बजाय कोई कैसे जान सकता है कि कौन सा तरीका आर्थिक रूप से अधिक व्यवहार्य है। कौन सा तरीका मनुष्य को केंद्र में रख कर अधिक लाभप्रद है ?

इसलिए नए प्रतिमान में व्यक्तिगत सुख यानी हम मनुष्य जो चाहते हैं, उसको सामाजिक उद्देश्य रूप में आर्थिक लक्ष्यों में अनुवाद किया जायेगा और इसमें अन्य प्राकृतिक बाधाएं शामिल होंगी (विज्ञान के हमारे ज्ञान के आधार पर जैसे पर्यावरण पर प्रभाव आदि)। इन बाधाओं को गणितीय समीकरणों में डाल कर और इन समीकरणों को वांछित लक्ष्यों के लिए संसाधनों को बेहतर ढंग से आवंटित करने के लिए हल किया जायेगा। इस प्रकार ऐसे उद्देश्य के लिए विकसित गणित और एल्गोरिदम का उपयोग करके आर्थिक निर्णय लेना होगा ताकि हम अपने सभी विचारों और बाधाओं को दर्ज कर सकें और नागरिकों के सुख को अधिकतम करने के लिए सबसे optimal तरीका खोजने के लिए इसे हल कर सकें। मनुष्य को ज्ञात सभी सुख के कारकों को ध्यान में रखते हुए ऐसी गणना के अलावा ज्ञान आधारित निर्णय लेने का कोई अन्य तरीका तो दिखता नहीं है। इस प्रकार ऐसे उद्देश्य के लिए डिज़ाइन किए गए सॉफ़्टवेयर का उपयोग योजनाकारों और प्रशासकों द्वारा आर्थिक गणना एवं निर्णयों के लिए किया जाएगा जो विभिन्न विकल्पों के चुनाव को simulate कर तुलना करने में मदद करेगा और इस तरह संसाधन आवंटन के संबंध में सही विकल्प चुन पाना संभव हो सकेगा। तो अर्थशास्त्र का विषय cost-efficiency के बजाय optimality की गणना करने की समस्या बन जाता है।

48

गुणवत्ता और दक्षता को कैसे बनाए रखा जा सकता है?

गुणवत्ता और दक्षता इसलिए संभव है क्यूंकि सभी अपनी गहरी रुचियों और योग्यता के हिसाब से काम कर रहे होंगे। जब यह व्यवस्था पूरी तरह से स्थित हो जाएगी तो लोगों को उनकी अभिरुचि अनुसार ही काम मिलेगा और इच्छा का काम करना सबको पसंद आता है। जब काम करने में मज़ा आता है तो हर आदमी स्वाभाविक रूप से अपना बेस्ट देता है। जब किसी व्यक्ति से सबसे अच्छा निकलता है तो वह qualitative वस्तु व सेवा के रूप में परिणित होगा। साथ ही ऐसी व्यवस्था में भाग लेने से प्रत्येक व्यक्ति को अधिकतम संभव incentive और अर्थ मिलता है। क्या पूरी तरह से सुखमय जीवन से बड़ा कोई incentive हो सकता है?

हर कामग़ार अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्था द्वारा प्रदान production target को हामी देगा। सिस्टम किसी को उत्पादकता बढ़ाने के लिए बाध्य नहीं कर रहा है। प्रत्येक कार्य दिवस में अनुमानित 4-5 घंटे का कार्य होगा। प्रत्येक कार्यकर्ता का लक्ष्य पूर्व निर्धारित होगा, जिसे धीरे-धीरे करने पर भी प्राप्त करना संभव होगा। हर कोई अपनी गति के अनुसार अपने लक्ष्य को पूरा करेगा। सिस्टम केवल अंतिम आउटपुट और इसकी गुणवत्ता के बारे में चिंतित है। आप कितने तेज या धीमे हैं इससे कोई सरोकार नहीं है। आपको बस एक उचित समय सीमा के भीतर अपने पूर्व-निर्धारित, स्व-अनुमोदित उत्पादन लक्ष्य को पूरा करना होगा। यह एक ऐसा माहौल तैयार करेगा जहां हम एक-दूसरे पर पुलिसिंग नहीं कर रहे हैं। लोगों को मजबूर नहीं किया जा रहा है और उन्हें काम पर खतरा महसूस नहीं होगा। लोग अपनी इच्छा से काम करेंगे और स्वाभाविक रूप से अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे। हर आउटपुट की गुणवत्ता की अलग-अलग चरणों में जांच की जाएगी।

49

संतुष्टि रेटिंग

प्रत्येक व्यक्ति सुख सुविधाओं का लाभ उठाने के दौरान अपने अनुभव के आधार पर मूल्यांकन कर सकता है। यह रेटिंग स्वचालित प्रणालियों द्वारा लगातार एकत्र की जाएंगी और उनका विश्लेषण किया जाएगा। चूंकि सत्ता का विकेंद्रीकरण है, इसलिए जब जनता किसी वस्तु/सेवा का उपयोग करेगी और यदि वह गुणात्मक नहीं है तो उसकी अंतिम समीक्षा नागरिकों की ओर से की जाएगी। यदि यह समीक्षा रेटिंग नकारात्मक आती है, तो उस अधिकारी/टीम/विभाग को सतर्क कर दिया जाएगा। तो जो जिम्मेदार होंगे उनसे पूछा जाएगा कि क्या हुआ है, और विश्लेषण के बाद, उस समस्या का समाधान किया जाएगा और आवश्यक उपाय किए जाएंगे ताकि अंतिम उपयोगकर्ता संतुष्ट हो और वह समस्या फिर से न हो। इस तरह इस व्यवस्था में गुणवत्ता नियंत्रण होगा।

50

क्या लोग इतनी मांग नहीं करेंगे जो उत्पादन क्षमता से अधिक हो जाए?

व्यक्तिगत मांग को हमेशा एक निर्धारित समय में पूरा किया जायेगा और इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं को जमा करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। भविष्य में उपलब्धता को लेकर लोगों को अनिश्चितता का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप यह भी समझेंगे कि कोई भी संसाधनों को जमा नहीं कर सकता क्योंकि सिस्टम आपको ऐसा करने के लिए तंत्र और मकसद नहीं देता है। शुरू में उत्पादों/सेवाओं के ऑर्डर देने की सीमाएं एक सिस्टम सुरक्षा के रूप में मौजूद रहेंगी और दुर्लभ वस्तुओं और सेवाओं को सामाजिक आधार पर जारी किया जाएगा ताकि हर कोई सुविधाओं का सुख ले सके।

Vs

व्यक्ति को किसी भी वस्तु / सेवा का मालिक बनने की ज़रूरत नहीं, जब उसे इच्छा होगी वह केवल उपयोग करेगा। अर्थात जो जिस भी वस्तु अथवा सर्विस का इस्तेमाल कर रहा होगा और जितनी देर तक कर रहा होगा, उसका अधिकारी रहेगा। उसके छोड़ने के बाद वह फिर से व्यवस्था के पास वह वस्तु या सर्विस लौट आएगी। लेकिन जिसको जो चाहिए जब चाहिए वह मिल रहा होगा, जिससे व्यक्ति सदैव सुखी ही बना रहेगा

51

कुछ उत्पादों/सेवाओं को व्यक्तिगत रूप से और कुछ को सामाजिक रूप से आवंटित किया जाएगा

कुछ वस्तुएं और सुविधाएं ऐसी होंगी, जिन्हें आप निजी या पारिवारिक स्तर पर उपयोग के लिए आरक्षित कर सकते हैं और आपके द्वारा इसका उपयोग करने के बाद, यह रीसायकल या नवीनीकरण के लिए सिस्टम में वापस चला जायेगा। दूसरी कुछ सुविधाएं सामाजिक स्तर की सुविधाएं होंगी। ये सुविधाएं सार्वजनिक हैं क्योंकि उन्हें रखरखाव की आवश्यकता होती है जो एकल व्यक्ति या परिवार की क्षमता से परे है। उनकी व्यवस्था प्रशासनिक क्षेत्र के स्तर के अनुसार की जाती है। उदाहरण के लिए, परिवहन, स्विमिंग पूल, जिम,आदि प्रत्येक हाउसिंग काम्प्लेक्स के लिए उपलब्ध कराई जाएगी। आपको स्विमिंग पूल या जिम के मालिक होने की आवश्यकता नहीं है। आपको बिना किसी सिरदर्द के अत्याधुनिक सुख सुविधाओं का आनंद मिलेगा।

52

समान मानक के सभी नगर

सभी नागरिक ecologically **उपयुक्त नगरों में रह रहे होंगे। सभी नगर समान आधुनिक सुविधाओं के साथ समान मानक के होंगे।**

स्कूल, अस्पताल, फिटनेस क्लब, स्वीमिंग पूल, मनोरंजन पार्क, पुस्तकालय, संग्रहालय, रेस्तरां, थिएटर, विभिन्न प्रकार के क्लबों आदि सहित सभी सुविधाओं के साथ नगर बनाए जाएंगे। सभी उम्र के लोग जीवन का सम्पूर्ण सुख ले सकेंगे।

राजनैतिक शक्ति नागरिकों के पास किस तरह से रहेगी जिस से सभी की स्वतंत्रता और सुख सुनिश्चित हो ?

53

असली लोकतंत्र

नया राजनीतिक मॉडल ऐसा है कि सारी शक्ति जनता में निहित होगी, किसी व्यक्ति या किसी पार्टी में नहीं। कोई राजनीतिक दल नहीं होंगे और केवल नेतृत्व की भूमिकाएँ मौजूद होंगी। 5 साल में सिर्फ एक बार नहीं बल्कि चौबीसों घंटे लोगों की इच्छा के अनुसार पूरी व्यवस्था काम करेगी। इस प्रकार, यह एक सच्चा लोकतंत्र होगा।

संविधान में किसी भी संशोधन के लिए जनता की सहमति की आवश्यकता होगी। जनता की सहमति के बिना संविधान के किसी भी प्रावधान में संशोधन नहीं किया जा सकता है जिसके कारण कभी भी ऐसा नियम नहीं होगा जिससे जनहित को ठेस पहुंचे और यही इस प्रणाली का मूल उद्देश्य है। संविधान हमेशा जनता के नियंत्रण में रहता है और इस तरह से जनता की खुशी सुनिश्चित करता है।

54

नीति, नियम और निर्देश का निर्माण

नई व्यवस्था में कार्यपालिका और विधायिका में कोई अलगाव नहीं होगा। नेतृत्व परिषद का output जिसके आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाएगा, वे तीन श्रेणियों के हैं, अर्थात् नीति, नियम और निर्देश। कोई भी नीति, विधान, योजना, प्रोग्राम, कार्यक्रम, अधिनियम, नियम, संहिता, कार्यकारी आदेश, घोषणा, संधि आदि इन तीन श्रेणियों में से किसी एक के अंतर्गत आएंगे।

समाज के लिए प्रमाणित किसी भी उत्पाद, सेवा, ज्ञान (दार्शनिक, वैज्ञानिक या अन्यथा) के संबंध में कोई भी नीति, कानून और निर्देश बनाने के लिए नेतृत्व परिषद, अनुसंधान प्लेटफार्मों और सार्वजनिक जनादेश से गुज़रना पड़ेगा। यदि किसी व्यक्ति के पास कोई मुद्दा है, तो खुले संवाद मंच का उपयोग सभी चिंताओं को रखने एवं उसका हल खोजने के लिए किया जायेगा ।

55

कानून पारित करना

कोई भी कानून लागु होने से पहले 3 महीने के लिए सार्वजनिक डोमेन में रहेगा। कानून की समीक्षा के लिए नागरिकों के पास 3 महीने का समय होगा। यदि वयस्क आबादी के कम से कम 10% द्वारा कोई आपत्ति नहीं है, तो यह स्वतः ही कानून बन जाता है। यह किसी भी उत्पाद, सेवा, नौकरी, ज्ञान के संबंध में किए गए किसी भी निर्णय पर लागू होता है। निर्देशों, नीतियों, कानूनों को कभी भी चुनौती दी जा सकती है यदि 10% इस पर आपत्ति करते हैं। यदि 10% को आपत्ति है तो मामला पुनः विचार के लिए चला जायेगा ।

यदि कोई बेहतर प्रस्ताव नहीं आता है जिसे सभी का समर्थन हो और यदि उस प्रशासनिक क्षेत्र के 10% मतदाताओं को आपत्ति है, तो नीति, नियम, निर्णय को वोट देने के लिए बहुमत की आवश्यकता होगी। अगर 70% मतदाता कानून को मंजूरी देते हैं, तभी इसे पारित किया जाएगा।

सरकार किसी भी उत्पाद, सेवा, नौकरी, ज्ञान से संबंधित नीति, नियम, निर्णय को सार्वजनिक करेगी। उदाहरण के लिए, यदि सरकार द्वारा कोई उत्पाद लॉन्च किया जाता है जो कुछ लोगों को लगता है कि समाज के लिए अच्छा नहीं है तो वे सार्वजनिक संवाद मंच में आपत्ति उठा सकते हैं और संबंधित नेता को आवश्यक प्रश्नों का उत्तर देना होगा। नेता से बातचीत के बाद भी यदि 10% मतदाता असंतुष्ट रहते हैं तो मामले को खुले संवाद मंच में आगे विचार-विमर्श के लिए भेजा जाएगा। यदि संवाद मंच में मामला नहीं सुलझा तो अंततः सार्वजनिक मतदान होगा। केवल बहुमत के वोट पर ही ऐसे उत्पाद को सार्वजनिक डोमेन में लॉन्च किया जा सकता है।

56

शिकायत निवारण

किसी भी प्रकार की शिकायत दर्ज करने के लिए उसी ऑनलाइन प्रणाली का उपयोग किया जाएगा और अधिकारियों को अपनी चिंता व्यक्त करने के लिए कोई भी परेशानी महसूस नहीं करेगा। जनता नागरिक संतुष्टि रेटिंग प्रदान करके प्राप्त उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन कर सकती है। जनता और नेता इस प्रतिक्रिया और रेटिंग को कभी भी देख सकते हैं। संबंधित विभाग द्वारा समस्या का उपचार करने के लिए आगामी कदम भी कभी भी देखे जा सकते हैं।

57

जनता अपनी शक्ति का इस्तेमाल कैसे करेगी?

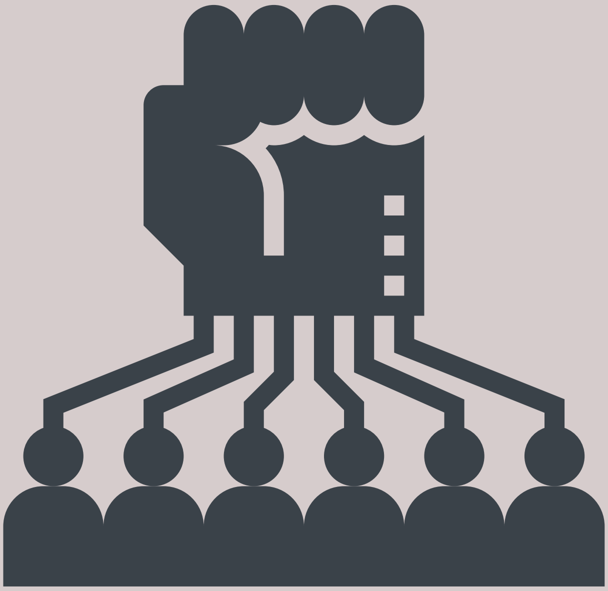

एक एल्गोरिथ्म जनता द्वारा प्रदान की गई नकारात्मक और सकारात्मक प्रतिक्रिया की संख्या की गणना करेगा। इसके बाद, नागरिकों की प्रतिक्रिया के आधार पर नेताओं और अधिकारियों की प्रदर्शन रेटिंग की गणना की जाएगी। ये प्रदर्शन रेटिंग निर्धारित करेंगी कि नेता या अधिकारी उस भूमिका में बने रहने के लिए उपयुक्त हैं या नहीं। यदि किसी पैमाने पर नेता का प्रदर्शन रेटिंग एक निश्चित मार्क से नीचे चला जाता है, तो आयोग उस पद के लिए फिर से चुनाव करेगा। इस प्रकार नागरिक संतुष्टि रेटिंग नागरिकों को नेतृत्व पर नियंत्रण करने के लिए एक संवैधानिक मार्ग प्रदान करती है।

58

व्यवस्था की पारदर्शिता

कुशल प्रबंधन और पारदर्शिता के लिए सार्वजनिक स्तर पर निर्णय लेने से संबंधित सभी डेटा एक केंद्रीकृत पोर्टल पर संग्रहीत किए जाएंगे। लोग अलग से आरटीआई (सूचना का अधिकार) आवेदन दायर किये बिना सीधे इस जानकारी तक पहुंच सकते हैं। सार्वजनिक स्तर पर निर्णय लेने के लिए नेताओं द्वारा आयोजित बैठकें वीडियो रिकॉर्ड की जाएंगी और live देखने के लिए उपलब्ध होंगी। सिस्टम के साथ नागरिक की हर बातचीत सहज, आसान और उपयोगकर्ता के अनुकूल होगी।

59

विरोध प्रदर्शन और हड़ताल की कोई जरूरत नहीं

किसी भी नीति-नियम पर आपत्ति उठाने के लिए लोगों को धरना,आंदोलन नहीं करना पड़ेगा। किसी भी विवादास्पद मुद्दे को हल करने के लिए सिस्टम में स्पष्ट चैनल होंगे। सभी के लिए <u>संवाद मंच</u> सदैव खुला रहेगा। नीति-नियम सम्बन्धी पूरा डेटा और शोध सार्वजनिक डोमेन में होगा। जो व्यक्ति किसी नीति पर आपत्ति उठाता है, उसे अपनी आपत्ति का औचित्य सिद्ध करना होगा। यदि वह संवाद मंच में सिद्ध नहीं कर सकता है, तो उसकी आपत्ति कोई आधार नहीं रखेगी।

60

खुला संवाद मंच

किसी भी समय, भले ही एक भी नागरिक यदि प्रशासन के किसी भी स्तर पर जारी किए गए नीतियों, नियमों और निर्देशों से नाखुश है अपनी चिंताओं को ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से रख सकता है। आवेदन या आपत्ति सार्वजनिक मंच पर रखे जाने के बाद, नेतृत्व उस व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के साथ बातचीत करेगा। संवाद जनता के देखने के लिए उपलब्ध होगा। संवाद द्वारा समस्या का तर्कसंगत आधार रखने पर समाधान तलाशा जायेगा। विश्व भर में अलग अलग स्तरों पर यह संवाद मंच सामाजिक स्तर के निर्णयों के लिए एक विशेष सुविधा है जो बहुत अहम् भूमिका निभाएंगे समाज को एक सोचे समझे दिशा में ले जाने के लिए।

इस प्रकार, संवाद का खुला मंच नागरिकों को समस्याओं पर चर्चा करने, समाधान सुझाने एवं नेताओं के साथ वार्ता के लिए प्लेटफार्म प्रदान करेगा। लोगों को किसी भी नीति पर आपत्ति जताने के लिए विरोध मार्च और धरना प्रदर्शन नहीं करना पड़ेगा। विरोध इस बात का संकेत है कि व्यवस्था अपर्याप्त है। संवाद के लिए संवैधानिक रूप से सक्षम मंच वह निर्दिष्ट स्थान है जहां प्रत्येक नागरिक नेताओं से अपने प्रश्न उठा सकता है। किसी भी विवादास्पद मुद्दे को हल करने के लिए सिस्टम के पास स्पष्ट चैनल होंगे। संवाद को सक्षम बनाया जायेगा और विषय से संबंधित संपूर्ण डेटा और शोध सार्वजनिक डोमेन पर होंगे। विरोध करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपको अपने तर्क प्रस्तुत करने का पूरा मौका दिया जायेगा और अंततः बातचीत, शोध और लोगों के जनादेश की एक अच्छी तरह से विकसित प्रक्रिया द्वारा मामला अंजाम तक पहुंचेगा।

61

पदों का आवंटन

नई व्यवस्था में हर पद का आवंटन परीक्षा के ज़रिये होगा कि कौन किस पद के लिए योग्य है। हर काम के लिए अच्छी तरह से परिभाषित मापदंड होंगे। इसमें नेतृत्व के पद भी शामिल हैं। नेतृत्व के पदों के लिए उम्मीदवारों को चयन परीक्षा की प्रक्रिया से गुज़रना होगा और फिर शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवार चुनाव के लिए पात्र हो जाएंगे।

62

प्रशासनिक विभाजन

प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए इस पूरे विश्व को पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

1. नगर
2. महानगर
3. राज्य
4. राष्ट्र
5. विश्व

लगभग 2,000,000 लोगों की जनसँख्या के लिए एक नगर होगा। 5 नगरों का समूह महानगर कहलाया जायेगा। 5 महानगर मिलकर एक राज्य कहलाये जायेंगे और सभी राज्यों का संघ एक राष्ट्र होगा। सभी राष्ट्रों का संघ एक विश्व होगा। प्रत्येक नगर में प्रति परिवार औसतन 5 सदस्यों को मानते हुए लगभग 400,000 घर होंगे। पूरे नगर में वे सभी सुविधाएं होंगी जिनकी लोगों को नियमित रूप से आवश्यकता होती है और सभी नगर समान मानक के होंगे।

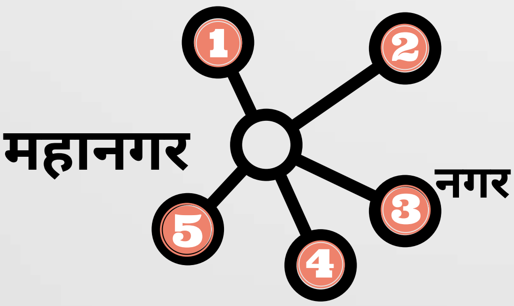

5 नगर=1 महानगर
1 नगर = 2000000 की
जनसँख्या अंदाज़न

5 महानगर =1 राज्य

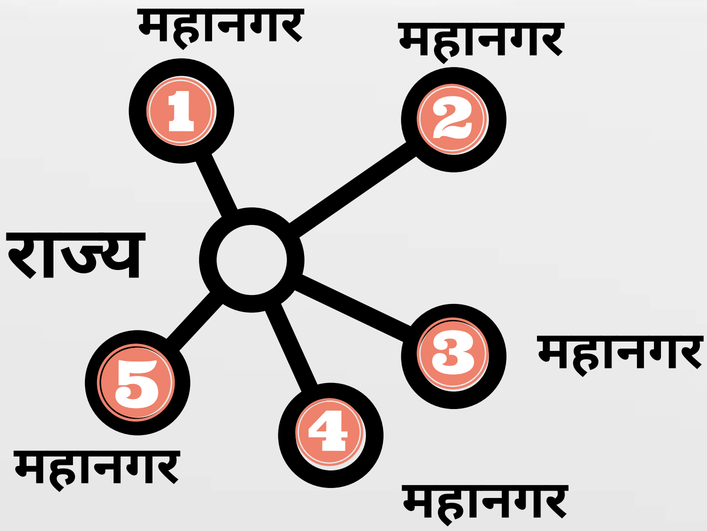

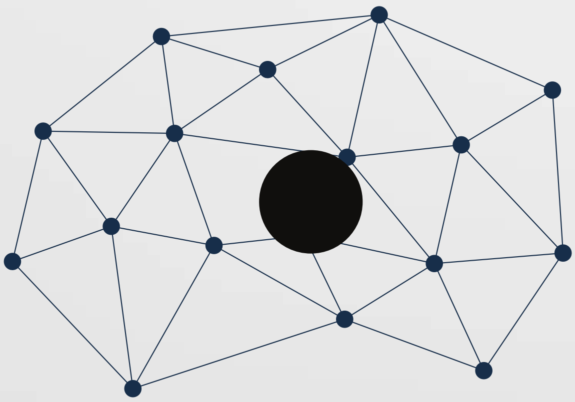

सभी राज्य =1 राष्ट्र

सभी राष्ट्र =1 विश्व

63

चुनाव प्रक्रिया

नेतृत्व आवेदन के लिए चेतना स्तर की योग्यता चाहिए होगी। इस प्रणाली में कोई राजनीतिक दल नहीं होंगे। 25 वर्ष से अधिक आयु का कोई भी व्यक्ति मतदान कर सकता है। नगर के स्तर पर, जनता चुनाव आयोग द्वारा चुने गए 80 उम्मीदवारों में से 40 नेताओं को चुनने के लिए मतदान करेगी ताकि कुल मिलाकर 40 नेता लगभग 2,000,000 लोगों के नगर की देख रेख कर सकें। इस तरह, प्रत्येक 50000 लोगों के लिए, दो उम्मीदवार चुनाव में भाग लेंगे और उनमें से एक को नेता के रूप में चुना जाएगा। 50000 की आबादी के लिए प्रत्येक नगर का एक नेता जिम्मेदार होगा। ये 40 नेता नगर स्तरीय नेतृत्व परिषद का गठन करेंगे।

केवल नगर के स्तर पर ही आम जनता अपने नेताओं को चुनने के लिए सीधे मतदान करेगी। ये 40 नेता समय-समय पर अध्यक्ष बनने के लिए सर्वसम्मति से आपस में किसी एक को चुनेंगे।

इसके बाद 5 नगरों के नेता (5x40 = 200 नेता) महानगर प्रशासन के लिए 10 शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों में से 5 नेताओं का चुनाव करेंगे। हर नगर के लिए एक महानगर नेता जिम्मेदार होगा और ये 5 नेता बनाएंगे महानगर स्तरीय नेतृत्व परिषद। फिर 5 महानगरों के नेता (5x5 = 25 नेता)10 शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों में से राज्य स्तर के लिए 5 नेताओं का चुनाव करेंगे। ये राज्य के 5 नेता 5 महानगरों के लिए जिम्मेदार होंगे जिसमें हर एक नेता एक महानगर को देखेगा। ये 5 नेता बनाएंगे राज्य स्तरीय नेतृत्व परिषद। सभी राज्यों के नेता (राष्ट्र के विस्तार के आधार पर) फिर 10 शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों में से राष्ट्रीय स्तर के लिए 5 नेताओं का चुनाव करेंगे। ये 5 राष्ट्रीय स्तर के नेता सभी राज्यों के लिए जिम्मेदार हैं। ये 5 नेता बनाएंगे राष्ट्रीय स्तर की नेतृत्व परिषद। फिर राष्ट्रीय स्तर के सभी नेता पूरी दुनिया का नेतृत्व करने के लिए 5 नेताओं का चुनाव करेंगे। ये 5 नेता विश्व स्तरीय नेतृत्व परिषद बनाएंगे।

कुछ और लाभ

64

एक सहज व्यवस्था

मौज़ूदा व्यवस्था

नयी व्यवस्था

इस व्यवस्था में किसी को लंबी कतारों में नहीं खड़ा होना पड़ेगा, बिलों का भुगतान नहीं करना पड़ेगा, करों का भुगतान नहीं करना पड़ेगा और न ही कोई बैंक होगा। जीवन में सुख सुविधाएं प्राप्त करने के लिए या अपनी पहचान साबित करने के लिए किसी भी संस्था को दस्तावेजों का अम्बार नहीं देना होगा। कम से कम कानून होंगे और पालन करना बहुत आसान होगा। सभी नियम तार्किक होंगे और सहज होंगे। अधिकांश प्रक्रियाएं ऑनलाइन पूरी की जा सकती हैं और जीवन बहुत आसान, सुरक्षित और सार्थक महसूस होगा।

65

आरामदायक और सुरक्षित कार्य वातावरण

यह व्यवस्था जीवन को आरामदायक और सुरक्षित बनाने के लिए technology का अधिकतम उपयोग करेगी। उदाहरण के लिए, कृषि ट्रैक्टर, ट्रक आदि एयर कंडीशनर से लैस होंगे और धूल वाहन में प्रवेश नहीं करेगा। इस प्रकार उपयोगकर्ता की सुविधा और सुरक्षा प्रमुख महत्व की होगी। यहां तक कि सबसे कठिन कार्य आसानी से प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ किया जाएगा। इस प्रकार कोई भी रोज़गार, हीन दृष्टि से नहीं देखा जायेगा। Sewer lines की manual सफाई जैसे कठिन या खतरनाक काम नहीं होंगे। वह सब उच्च कोटि के प्रौद्योगिकी द्वारा पूरा किया जाएगा।

66

प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय नहीं रहेगा

मौज़ूदा व्यवस्था

नयी व्यवस्था

सभी उत्पाद मानकीकृत होंगे और high quality के होंगे। प्राकृतिक चक्र को बनाए रखने के लिए, इस्तेमाल किए गए उत्पादों को recycle या विघटित किया जाएगा। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग नहीं होगा। प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन एक चिंता का विषय नहीं रहेगा।

67

धार्मिक मान्यता आपका व्यक्तिगत मामला है जब तक यह व्यक्तिगत क्षेत्र में है

लोग केवल व्यक्तिगत स्तर पर अपने धार्मिक विश्वासों का अभ्यास करने के लिए स्वतंत्र होंगे। उनके अभ्यास से दूसरों को वास्तविक असुविधा और संकट पैदा नहीं होना चाहिए। किसी भी ज्ञान को सामाजिक स्तर के लिए प्रमाणित करने के लिए उसे पहले निर्दिष्ट फोरम में साबित करना होगा।

68

अपराध के लिए कोई मक़सद या तंत्र नहीं रह जायेगा

व्यक्तियों के आपस में आदान-प्रदान करने के लिए धन मौजूद नहीं है, और इस प्रकार संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए वित्तीय धोखाधड़ी और अन्य अपराध करने की कोई संभावना नहीं होगी। इस प्रकार यह एक बहुत ही सरल प्रणाली है जिसमें सद्भाव बनाए रखने के लिए किसी भी पुलिस बल का न्यूनतम उपयोग होगा। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल की भूमिका धीरे-धीरे अप्रचलित हो जाएगी।

कोई अपराध नहीं होगा क्योंकि अपराध करने से, कोई भी कुछ भी अतिरिक्त हासिल नहीं करेगा जोकि वह पहले से ही सिस्टम द्वारा प्राप्त नहीं कर रहा है। इस प्रकार, भ्रष्टाचार, खाद्य पदार्थ में मिलावट, धोखाधड़ी, लूट, शोषण, तानाशाही, सत्ता की लालसा आदि नहीं पैदा होंगे।

69

किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं

समाज में लिंग, जाति और पंथ के आधार पर होने वाला भेदभाव अपने आप समाप्त हो जाएगा। विभिन्न धर्मों, देशों, समुदायों, परिवारों और गुटों के बीच संघर्ष समाप्त हो जाएगा क्योंकि लोगों को अलग-थलग करने वाला मूल कारण मौजूद नहीं होगा।

70

परिवार के सदस्यों के बीच संबंध वास्तविक होंगे

परिवार के सभी सदस्य सिस्टम से सीधे जुड़े होंगे और जब भी उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता होगी, वे सीधे सिस्टम से उसकी मांग कर सकते हैं। कोई आर्थिक निर्भरता नहीं होगी, जिसके कारण परिवार के सदस्यों के बीच संबंध वास्तविक होंगे और झूठ बोलने की आवश्यकता नहीं होगी। जब ऐसा होता है तो एक-दूसरे के बीच विश्वास होगा और उनके रिश्ते मधुर और सौहार्दपूर्ण होंगे। एक व्यक्ति दूसरे को दबाने में सक्षम नहीं होगा। दूसरे शब्दों में, हर कोई रिश्तों की मिठास का आनंद ले रहा होगा और कोई भी रिश्ता आर्थिक कारणों से संकट का अनुभव नहीं करेगा, नैतिक दुविधा और दबाव अनुभव नहीं करेगा।

71

किसी को कष्ट और प्रताड़ना नहीं झेलना पड़ेगा

एक व्यक्ति दूसरे को दबा नहीं पाएगा और ज़बरदस्ती नहीं कर पाएगा। दूसरे शब्दों में, हर कोई रिश्तों की मिठास का आनंद ले रहा होगा और कोई भी रिश्ता वित्तीय कारणों से संकट का अनुभव नहीं करेगा और नैतिक दुविधा का सामना नहीं करेगा।

ऐसी व्यवस्था में रहते हुए भविष्य की चिंताओं को लेकर किसी को तनाव नहीं होगा। लोगों को ऐसी स्थितियों का अनुभव नहीं होगा जैसे, "मैं कल के लिए भोजन की व्यवस्था कैसे करूंगा, मैं घर चलाने के लिए खर्च कैसे प्रबंधित करूंगा, मैं चिकित्सा उपचार कैसे कर सकता हूं, अगर मेरी नौकरी छूट गई तो क्या होगा" आदि। तो ऐसी चिंताएं पैदा नहीं होंगी और यदि कोई अन्य समस्या आती है, तो उसे विशेषज्ञों द्वारा बहुत जल्द हल किया जाएगा। सभी नागरिक हमेशा सिस्टम द्वारा समर्थित महसूस करेंगे और शान्तियुक्त सामंजस्यपूर्ण जीवन का अनुभव करेंगे।

72

लम्बी उम्र और सुखद स्वस्थ जीवन

इस नई व्यवस्था में, चाहे वह बच्चे, युवा, वयस्क, बुज़ुर्ग, पुरुष, महिला, किसी भी लिंग के लोग हों, हर कोई अपनी इच्छानुसार, बिना किसी डर के खुशहाल जीवन जी सकेगा। महिलाएं और बच्चे हमेशा सुरक्षित और मुक्त महसूस करेंगे। लोग दूसरों का दबाव और नियंत्रण अनुभव नहीं करेंगे।

यह व्यापक रूप से प्रचलित बात है कि जब मनुष्य जीवन में परेशान और तनावग्रस्त महसूस करता है, तो उसके शरीर में बहुत सारी बीमारियाँ होने लगती हैं और उत्पन्न होती ही रहती हैं। तो इस नयी प्रणाली के आने के बाद मनुष्य के जीवन में कोई चिंता नहीं होगी और इस प्रकार बीमार आबादी काफी कम हो जाएगी और जो भी हल्के रोग होंगे उनका तुरंत इलाज किया जाएगा। मनुष्य के प्राकृतिक आयु में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और विज्ञान के विकास से भी जीवन काल को इच्छानुसार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

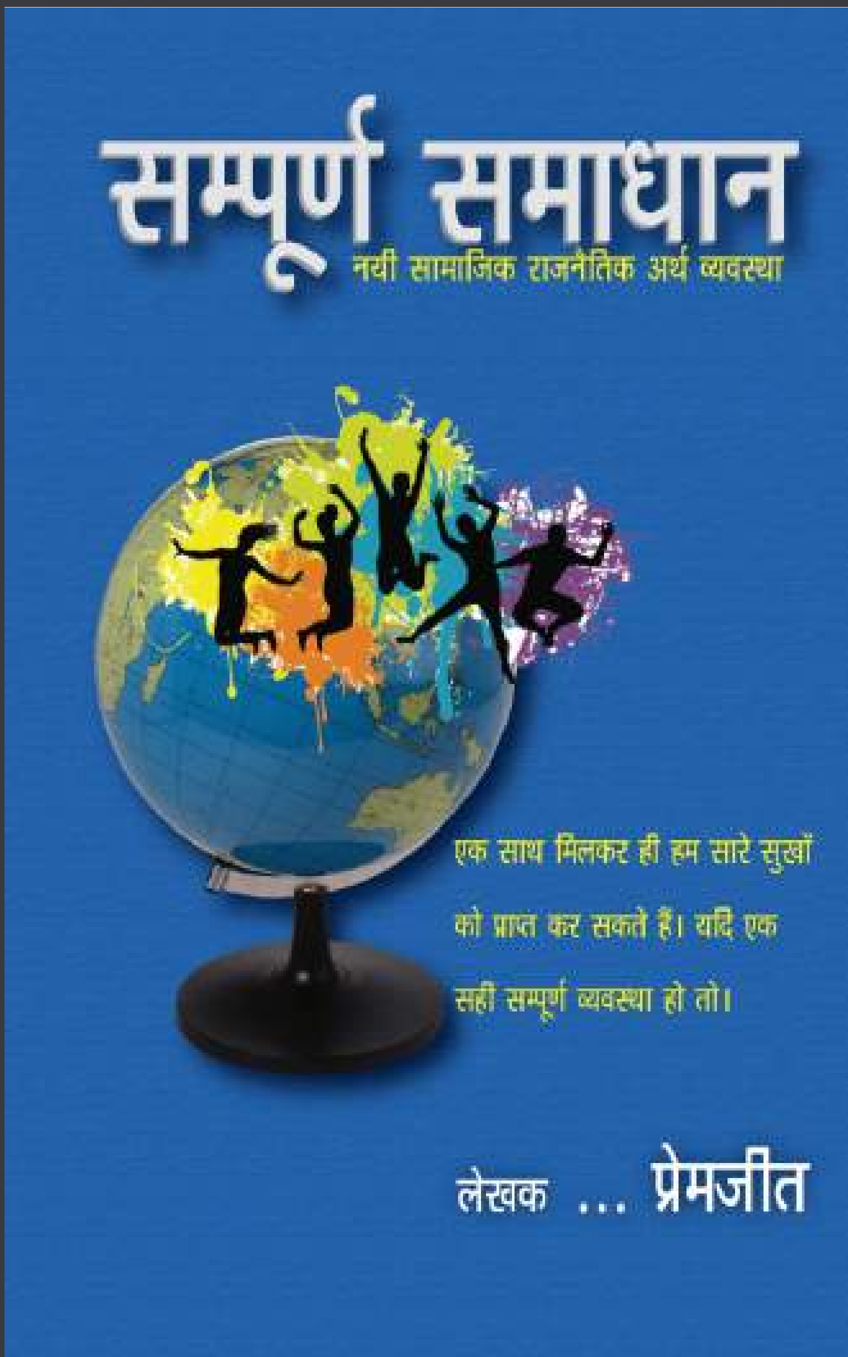

गहराई से इस प्रस्ताव को समझने के लिए कृपया '<u>सम्पूर्ण समाधान</u>' विस्तृत पुस्तक को पढ़ें। धन्यवाद!